ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक

वर्ष 14 | अंक-21 | फरवरी-I, 2014 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | मूल्य-7.50

ईश्वरीय शक्ति एवं वरदानों से 2014 बनेगा स्व-परिवर्तन वर्ष

नई दिल्ली। नव-वर्ष के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्थानीय हरी नगर सेवाकेंद्र द्वारा "शान्ति और समृद्धि के लिए ईश्वरीय शक्ति एवं वरदानों की प्राप्ति" विषय पर आयोजित एक सार्वजनिक स्नेह मिलन में 2014 को स्व-परिवर्तन वर्ष के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग के अध्यक्ष न्यायाधीश वी. ईश्वरैया ने कार्यक्रम को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि जैसे दिल्ली में सुधार लाने के लिए आम आदमी पार्टी आई है वैसे संसार को सुधारने के लिए परमात्मा अवतरित हुए हैं।

उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन और समाज में शान्ति एवं समृद्धि के लिए सद्भावना, सद्गुण और सत्कर्मों की आवश्यकता है, जो कि ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग से ही विकसित हो सकते हैं।

उन्होंने कहा कि समाज में जिस गति से पाप, भ्रष्टाचार और विशेष महिलाओं तथा बच्चों के ऊपर यौन अपराध बढ़ रहे हैं, ऐसे समय में आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा लोगों की मनोवृत्ति, नज़रिया, चरित्र एवं आचरण को शालीन और श्रेष्ठ बनाने की आवश्यकता है। इस दिशा में ब्रह्माकुमारी संस्था की सात सूत्रीय शुभ संकल्प सूची बहुत कारगर साबित होगी।

आम आदमी पार्टी के हरी नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक सरदार जगदीप सिंह ने इस अवसर पर सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि लगन से लोगों की सेवा करने की प्रेरणा उन्हें स्वयं परमात्मा से प्राप्त हुई है। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था के ईश्वरीय कार्य में पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए कहा कि परमात्म-कार्य ही जन-कल्याण सेवा है जिससे आत्मा को शान्ति मिलती है और जिस सेवा के लिए आम आदमी पार्टी समर्पित है।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.कमलेश ने नए वर्ष की सभी को बधाई देते हुए सांसारिक जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान का समावेश कर कमल पुष्प समान न्यारा व प्यारा जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी।

ब्र.कु.प्रियंका ने उपस्थित जनसमूह को सात सूत्रीय दृढ़ संकल्प सूची का पाठ कराते हुए सकारात्मकता, दिव्य गुण, अच्छी आदतें एवं आचरण अपनाने के लिए आग्रह किया। स्कूल के बच्चों ने मानवीय मूल्यों पर आधारित दिव्य गीत , संगीत एवं नृत्य नाटिका द्वारा जन समागम को मोहित किया।

नये वर्ष के कार्यक्रम 'रिसीविंग गॉड्स पावर एण्ड ब्लेसिंग फॉर पीस एण्ड प्रोग्रेस' में दीप प्रज्वलन करते हुए न्यायाधीश वी. ईश्वरैय्या, जगदीप सिंह,विधायक 'आप', कर्नल बी.सी. साटी, ब्र.कु. कमलेश तथा ब्र.कु. सुंदरलाल।

वर्तमान समय हरेक के मस्तिष्क में चल रही महाभारत

अहिंसा परमोधर्म तथा भगवद्गीता' पर हुआ मंथन

प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा गीता के प्रत्येक श्लोक के गुप्त अर्थों पर चिंतन किया गया। वार्तालाप के मध्य कई विवादास्पद विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया जैसे - क्या ज्ञान और अज्ञान का एक साथ अस्तित्व है? क्या आज के परिप्रेक्ष्य में गीता के अलग अध्याय की आवश्यकता है? दैवी सम्पत्ति, आसुरी संपत्ति एवं रुद्र ज्ञान यज्ञ का सही अभिप्राय क्या है? प्रतिष्ठित वक्ताओं ने भगवद्गीता एवं अन्य शास्त्रों के आधार पर इन विषयों पर अपने मत प्रस्तुत किए।

महाभारत एक समय पर होने वाली घटना नहीं है। यह केवल एक अर्जुन को हिंसात्मक युद्ध करने को प्रेरित करने पर आधारित नहीं है। आज प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में महाभारत का युद्ध चल रहा है। परमपिता परमात्मा सभी आत्माओं के समक्ष इसका रहस्योद्घाटन करते हैं। गीता के आधार पर कोई भी व्यक्ति अमरता को प्राप्त कर सकता है। यदि गीता के प्रत्येक श्लोक के सही अर्थ एवं महत्व को समझें तो व्यक्ति मानसिक एवं भावनात्मक रूप से स्थिर हो सकता है।

आज लोगों का यह मानना कि 'शक्ति ही सत्य है' अन्याय का कारण है। यह विचार भी पूर्णत: सही नहीं है, यह रजोगुण दर्शाता है जो अहिंसा से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है। प्रकाश का अभाव अंधेरा है, इसलिए सत्य एवं असत्य का एक साथ होना संभव नहीं है।

ओ.आर.सी. में मनाया गया विजयोत्सव

गुड़गाँव-ओ.आर.सी.। युगलों के लिए आयोजित विजयोत्सव का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए दादी जानकी, दादी कमलमणि, दादी रुक्मणि, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.शुक्ला, ब्र.कु.रानी तथा अन्य। हॉल में उपस्थित हैं विजयोत्सव के लिए आए सभी युगल।

गुड़गाँव-ओ.आर.सी.। ब्रह्माकुमारीज़ के बहोड़ा कलां, पटौदी रोड स्थित ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर में 7 व 8 दिसम्बर को आदरणीय दादी जानकी के सानिध्य में दिल्ली ज़ोन के 15 वर्ष से अधिक ईश्वरीय ज्ञान व मर्यादाओं का पूर्ण रूप से पालन करने वाले युगलों के लिए विजय उत्सव का आयोजन किया गया।

युगलों के आगमन पर उनका स्वागत किया गया तथा दादी जानकी जी व अन्य दादियों ने इन सभी युगलों को अपने आशीर्वचनों से भरपूर किया। सभी दादियों व ओ.आर.सी. में निमित्त त्रिमूर्ति बहनों ने अपने हस्तों द्वारा इन सभी युगल मूरतों को बाबा के घर से सौगात भेंट की।

विभिन्न सेवाकेन्द्रों की दस टीचर्स बहनों ने स्टेज पर योग कराया, इसके पश्चात् ब्र.कु. बृजमोहन ने शक्तिशाली क्लास कराकर सभी में बल भरा।

दादी ने अपने अनुभव, अपनी आशाओं तथा बाबा की आशाओं को सभी के सामने रखा। उन्होंने ब्रह्मा वत्सों से दिल्ली में 18 जनवरी पर बाबा की उम्मीदों पर खरा उतरने हेतु कार्यक्रम रखने की सलाह दी क्योंकि बाबा ने दिल्ली को 45 साल अव्यक्त पालना दी है। उन्होंने कहा, मैं ये नहीं कहती सभी आत्माओं को सन्देश मिले परन्तु सभी आत्माओं को साक्षात्कार हो। सभी कहें मेरा बाबा मुझको मिल गया।

उन्होंने कहा कि हमें श्वांस, संकल्प और समय तीनों बाबा की याद में सफल करना है। कभी भी हमारे श्वांस, संकल्प से दु:ख की लहर का नाम-निशान न हो।

उन्होंने कहा जब बाबा ने सबसे पहले दिल्ली में मुरली चलाई तो सभी घबरा गये कि बाबा क्या बोलेंगे। ये नाटक है कहां अटको नहीं, लटको नहीं, चटको नहीं। अटकना, चटकना, लटकना न्यारा और प्यारा नहीं बनने देता। दुनिया को प्रभु चला रहा है मनुष्य की बात नहीं है।

इसके पश्चात् सभी युगलों को आदरणीय दादीजी ने बहुत सुन्दर मालायें पहनाईं और सौगात प्रदान की। युगलों के लिए गार्डन में केक कटिंग सेरीमनी व संगीत संध्या का भी

विजयोत्सव में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग में चलने वाले युगलों का किया गया सम्मान

आयोजन किया गया। संगीत के साथ गार्डन में दादी जी का स्वागत किया गया और केक काटने के पश्चात् सभी ने गुब्बारों से खेलते हुए रास की। इसके बाद संगीतकारों व नृत्य कलाकारों ने अपनी कला प्रस्तुत कर इस अलौकिक रात्रि में नये रंग भरे।

सभी विजयी रत्न बाबा के घर से प्राप्त सौगात, ताज, माला व चुनरी पहनकर बाबा के कमरे में गये, बाबा के कमरे में इन्हें ब्लैसिंग कार्ड मिला। इसके पश्चात् सभी झण्डे के नीचे गये और प्यारे बाबा की स्मृति में ध्वजारोहण कर बाबा से कुछ प्रतिज्ञाएं की। इसके पश्चात् ये प्रोसेशन के रूप में मेन ऑडीटोरियम में पहुंचे जिसको बहुत ही सुन्दर रूप देकर सजाया गया था। ऑडीटोरियम में पहुंचने पर इनका गीत, कवाली व नृत्य द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

दादी जी के स्वागत के पश्चात् दिल्ली के कुछ बच्चों ने यज्ञ से संबंधित कुछ झलकियां प्रस्तुत की जिन्हें देखकर सभी भाव-विभोर हो गए। तत्पश्चात् दादी जी ने अपने कमल हस्तों से ओ.आर.सी. व विजय उत्सव के निमित्त सजे हुए केक काटे। विजय उत्सव के साथ ओ.आर.सी. का वार्षिक उत्सव भी दादी जानकी जी के सानिध्य में बहुत धूमधाम से मनाया गया।

शान्तिवन। दादी जानकी सभी वरिष्ठ भाई-बहनों के साथ केक काटते हुए।

नव वर्ष के अवसर पर विशाल डायमण्ड हॉल में महान हस्तियों की उपस्थिति में दादी जानकी का 98वाँ जन्मदिन बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर कई रंगारंग कार्यक्रम हुए और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ पेश की गईं। तीस से अधिक देशों से आए अतिथियों सहित पूरा हॉल ब्रह्मावत्सों की मौजूदगी में खचाखच भरा हुआ था। संस्थान के महासचिव ब्र.कु.निर्वैर ने दादी के 98वें जन्मदिवस पर शुभकामनाएँ दी। दादी जानकी ने कहा कि परमात्मा के साथ के जीवन के पल बहुत ही सुखद अनुभव कराते हैं और जीवन में त्याग का बहुत बड़ा महत्व है जिससे ही हमारी तकदीर की तदबीर बनती है। दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.रमेश, ब्र.कु.करुणा, ब्र.कु.मृत्युन्जय, ब्र.कु.आत्मप्रकाश, ब्र.कु.ओमप्रकाश सहित अनेक वरिष्ठ भाई-बहनों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

विश्व शान्ति सभागार में होगा श्रेष्ठ समाज का निमार्ण

पानीपत। विश्व शान्ति सभागार में श्रेष्ठ भावी पीढ़ी व श्रेष्ठ समाज का निर्माण होगा। आनेवाले समय में इस सभागार में होने वाले कार्यक्रम मनुष्यों में श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करेंगे। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के निर्माणाधीन परिसर ज्ञान मानसरोवर में विश्व शान्ति सभागार का शिलान्यास करते हुए कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि पधारे हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने व्यक्त किए।

उन्होंने आगे कहा कि आज समाज में इन्सान तो बढ़ते जा रहे हैं परन्तु इन्सानियत घटती जा रही है। आज मानव अपने मार्ग से भटक चुका है और हिंसा के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है। परन्तु हिंसा से ज़्यादा शक्ति है अहिंसा के मार्ग पर। गांधी जी ने अहिंसा का मार्ग अपनाकर ही हमें आज़ादी दिलाई। एक सुसंस्कृत, चरित्रवान मनुष्य ही अहिंसा के मार्ग पर चल सकता है और दूसरों के सामने आदर्श प्रस्तुत कर सकता है।

कार्यक्रम में पधारी मुख्य वक्ता ओ.आर.सी. की डायरेक्टर ब्र.कु.आशा ने कहा कि विदेशों में आज भी भारत की संस्कृति का सम्मान किया जाता है। भारत को आध्यात्म के जगतगुरु के नाम से जाना जाता है और आज भी वे भारत से ही आध्यात्म शक्ति लेते हैं। इसलिए अब हमारा भी कुछ कर्तव्य बनता है कि हम अपनी इस सुसंस्कृति को बरकरार रखें, न कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर स्वयं को मूल्यहीन बनाएं। उन्होंने कहा कि आज मुझे इस बात पर अफसोस होता है कि हमारे भाई-बहनें आधुनिकता के नाम पर अपने चरित्र का पतन कर रहे हैं। तन ढ़कने की वस्तु है और संस्कार दिखाने की, परन्तु आज मानव बिल्कुल इसके विपरीत कर रहा है। श्रीमद्भागवद् गीता में भी वर्णित है कि अर्जुन तुम काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार को अपना शत्रु मानकर इनका वध करो।

ज्ञान मानसरोवर के ब्र.कु.भारत भूषण ने अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए सभी श्रोताओं को ईश्वरीय विश्वविद्यालय की गतिविधियों से अवगत कराया। साथ ही साथ श्रेष्ठ समाज के निर्माण में इस निर्माणाधीन परिसर के योगदान पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि किस प्रकार इस निर्माणाधीन परिसर में अब तक 10 से ज़्यादा विशाल सेमिनारों का सफल आयोजन किया जा चुका है जिनमें मुख्य हैं पंच सरपंच सम्मेलन, महिला सशक्तिकरण, यौगिक खेती, क्लीन द माइंड ग्रीन द अर्थ एवं चरित्र निर्माण द्वारा नव निर्माण। ब्रह्माकुमारीज़ की पानीपत सबज़ोन इंचार्ज ब्र.कु.सरला ने अपनी शुभकामनाएँ दीं और राजयोग का अभ्यास कराया। कार्यक्रम में अन्य मुख्य अतिथियों में सांसद अरविन्द शर्मा, धर्मसिंह छौक्कर, विधायक बलबीर पाल शाह तथा बच्चन सिंह आर्य भी शामिल रहे। अनेकानेक बच्चों ने अपने नृत्य द्वारा सबका मन मोह लिया।

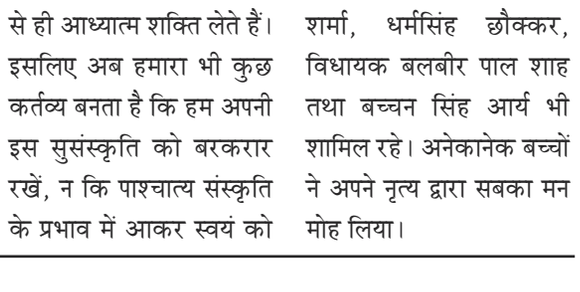

ज्ञान मानसरोवर में विश्व शान्ति सभागार के शिलान्यास कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, ब्र.कु. आशा तथा ब्र.कु. भारत भूषण।

अहिंसा से पुन:स्थापित होगा स्वर्णिम संसार

चेन्नई। सम्मेलन के दौरान अपने भाव व्यक्त करते हुए पूर्व सी.बी.आई. निदेशक डॉ. डी.आर.कार्तिकेयन, ब्र.कु.बृजमोहन, ब्र.कु.आशा एवं पूर्व एक्टिंग जस्टिस आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट वी.ईश्वरैया।

चेन्नई। जहां आज संपूर्ण राष्ट्र में महिलाओं के प्रति हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ अपने चर्मोत्कर्ष पर हैं वहीं ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा अहिंसा एवं सत्य पर दो दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय था 'अहिंसा परमोधर्म तथा भगवद्गीता'। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 21 दिसंबर 2013 को सायं 6:30 बजे रानी सीथाई हॉल, चेन्नई में तमिलनाडु के डॉ.रोसइय्या द्वारा किया गया।

सभी वक्ताओं ने इस प्रकार के सम्मेलनों को महत्वपूर्ण बताया। सभी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि अहिंसा महान आचरण है जिसका प्रचीन भारत के लोग अपने जीवन में निर्वाह करते थे। आध्यात्मिक बुद्धिमता एवं विश्वव्यापी मूल्यों की धारणा के लिए गीता की महत्ता को स्वीकार किया गया। गीता में उस विलक्षण युद्ध के विषय में हमें स्पष्ट उल्लेख मिलता है। परमात्मा ने सम्पूर्ण अहिंसा द्वारा पवित्र विश्व की स्थापना की, न कि हिंसा के द्वारा। भगवद्गीता के कुछ अध्याय का अध्ययन सभी को निरंतर करना चाहिए तथा नई पीढ़ी को इसके महत्व के प्रति जागृत करना चाहिए।

भारत शब्द तीन अक्षरों से मिलकर बना है, जिसमें 'भा' का अर्थ है - धन्यागार, जो कि समृद्धि का परिचायक है, 'र' का अर्थ है - संस्कृति सम्पन्न, जो कि प्राचीन समाज में था एवं 'त' का अर्थ है - दैवी एवं आध्यात्मिक रूप से समृद्ध। हमारे देश को अहिंसा के महान दैवी गुण द्वारा ही आज़ादी प्राप्त हुई। परंतु आज अपने चारो ओर की घटनाओं को देखकर हम शर्मिंदगी महसूस करते हैं। इसको ही धर्मग्लानि कहा जाता है। इस समय पर आकर होने वाली घटनाओं को देखकर सभी एक स्वर में कहते हैं कि हम इस भारत के रहने वाले नहीं हैं जो आज हमें दिखाई दे रहा है परंतु देवी-देवताओं के भारत जहां सुख एवं शांति थी, हम उस भारत के रहने वाले हैं।

आध्यात्मिक बुद्धिमता एवं विश्वव्यापी मूल्यों की धारणा के लिए गीता की महत्ता को स्वीकार किया गया। गीता में उस विलक्षण युद्ध के विषय में हमें स्पष्ट उल्लेख मिलता है। परमात्मा ने सम्पूर्ण अहिंसा द्वारा पवित्र विश्व की स्थापना की, न कि हिंसा के द्वारा। भगवद्गीता के कुछ अध्याय का अध्ययन सभी को निरंतर करना चाहिए तथा नई पीढ़ी को इसके महत्व के प्रति जागृत करना चाहिए।

अन्य प्रतिष्ठित वक्ताओं में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, न्यायमूर्ति ईश्वरैय्या, मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, तमिल वनन एवं रमा सुब्रमनियम, सी.बी.आई के निदेशक डॉ. डी.आर.कार्तिकेय, श्री रामकृष्ण मठ, चेन्नई के श्रीमत स्वामी बुद्धिनंदजी महाराज, लेखक एवं विद्वान चार्टर्ड एकाउण्टेंट श्री एस. गुरुमूर्ति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस.एम.मिश्रा, ब्रह्मज्ञान सभा के निदेशक थीरु ला, गीता के विद्वान श्री आई.त्रिनाथ एवं पुष्पा पांडेय, अतिरिक्त सचिव एवं प्यूरिटी मैगज़ीन के संपादक ब्र.कु. बृजमोहन, ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर दिल्ली की निदेशिका ब्र.कु.आशा आदि सम्मिलित थे।

आरंभ में ब्रह्माकुमारीज़ के तमिलनाडु ज़ोन की संचालिका ब्र.कु. बीना ने संस्था का संक्षिप्त परिचय दिया एवं सम्मेलन में पधारे अतिथियों का स्वागत किया। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. डॉ. उमा एवं ब्र.कु. मुत्थुमणि ने प्रतिभागियों को कॉमेन्ट्री द्वारा योग करवाकर शांति की अनुभूति कराई। संगीत निदेशिका एवं गायिका एस.जे.जनानी ने अपने मधुर संगीत द्वारा सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री जगद्गुरु वेद विद्याभवन विद्यालय के विद्यार्थियों ने गीता के श्लोक उच्चारित कर वातावरण को और दिव्य बनाया। कलाइमायनी के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। प्रथम दिन ब्र.कु. सुदर्शन एवं ब्र.कु.नीलिमा द्वारा मंच संचालन किया गया।

ब्र.कु. पंकज एवं ब्र.कु. देवी द्वारा अतिथियों का स्वागत किया गया तथा ब्र.कु. नीलिमा एवं ब्रह्माकुमारी बहनों ने योग के द्वारा सभी को शांति का अनुभव कराया। ब्र.कु. रंजनी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

परमात्मा की सत्य पहचान के पांच आधार

अब यह तो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है कि परमात्मा एक है और वह सत्य है। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा का परिचय भी केवल एक ही हो सकता है। ईश्वर की सत्य पहचान क्या होगी? जिस प्रकार किसी डॉक्टर की पहचान उसके ज्ञान, अनुभव, गुणों तथा कर्तव्यों के आधार पर ही की जा सकती है, उसी प्रकार परमात्मा की भी सत्य पहचान निम्न पांच बातों के आधार पर की जा सकती है–

– जो सर्वमान्य हो: परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानि जिसे सभी धर्मों की आत्माएं सहज ही स्वीकार करें, क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि परंतु वह है तो एक ही।

– जो सर्वोच्च हो: परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो यानी उसके ऊपर कोई हस्ती न हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है- ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, गुण, धाम, और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।

– जो सबसे न्यारा हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे न्यारा हो। परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप पुण्य, सुख-दु:ख के चक्करों में नहीं आते हैं। परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी न्यारा है। वह सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई नहीं है परंतु उनके समान भी कोई नहीं है।

– जो सर्वज्ञ हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो अर्थात् वह सबकुछ जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है।

- ब्र. कु. गंगाधर

– जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो: परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो। परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है, परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देने वाला जब भी देता है तो छप्पड़ फाड़ के देता है।

हम किसी भी साकार देहधारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते, क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वमान्य नहीं हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो। साकार देहधारी के माता-पिता, शिक्षक, गुरु, रक्षक अवश्य ही होते हैं इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं कह सकते हैं। साकार व्यक्ति सबसे न्यारा भी नहीं हो सकता है क्योंकि साकार के साथ जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य और सुख-दु:ख आदि भी संलग्न हैं। साकार सर्व का ज्ञाता तथा दाता भी नहीं बन सकता है। वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शक्ति मांगता ही रहता है। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता।

सृजनात्मकता में बाधक बनती हैं पूर्व धारणाएं

प्रश्न:- देखा, अब उसने ऐसे किया तो अब ऐसे ही होना चाहिए।

उत्तर :- जैसे कि यह क्रिकेट मैच हो। दूसरे ही क्षण हम जजमेंटल हो जाते हैं और लोगों से विचार चाहते हैं कि हम ऐसे करते तो ऐसा नहीं होता। इवेन दि एक्टर इज़ क्लोज़, सी नो वाटऐवर... ऐवरीथिंग। और मैं जजमेंटल होना शुरू कर देती हूँ। जैसे जजमेंट शुरू हुआ मतलब क्यों, क्या, कैसे की क्वेश्चन मार्क की सीरीज़ में गये। ये जो मन की स्थिरता थी, वो क्या हो गयी? वो खत्म हो गयी। हमारा मन फिर से डिस्टर्ब होना शुरू हो जाता है और मन की स्थिरता समाप्त हो जाती है। यह हमारी दूसरी स्टेज है। तीसरी अवस्था जो आती है कि हम उस कैरेक्टर की स्टोरी के अंदर ही पूरी तरह से इन्वॉल्व हो जाते हैं। और यह अवस्था ऐसी होती है कि वो कैरेक्टर जो इमोशन वहां अनुभव कर रहा है, वो इमोशन हम यहां अनुभव करना शुरू कर देते हैं। फिर हम पूरी तरह से उस कहानी में सम्मिलित हो जाते हैं। फिर हमारे मन में कोई दूसरी थॉट होती ही नहीं है, क्योंकि हमारी क्रियाशीलता जो है वो खत्म हो जाती है। फिर मैं वही सोचती हूँ जो कि उस स्टोरी में क्रियेट हो रहा है। मेरी अपनी अब कोई क्रियाशीलता नहीं रह गयी।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न:- उससे पहले तो मैं कर रही थी। जब मैं जजमेंटल हो रही थी।

उत्तर :- जैसे ही जजमेंटल हुए तब क्या हुआ, क्रियेटिविटी नहीं थी। जैसे ही आप जजमेंटल होते हैं आपकी एनर्जी तो उल्टा खत्म होने लगती है। क्योंकि आप किसी और को कंट्रोल करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसको आप कंट्रोल नहीं कर सकते हैं। आई कैन सिट एक्रॉस द टेलीविज़न एण्ड कीप ऑन सेयिंग वाट आई वाण्ट टू से। मैं कितना भी जजमेंटल हो सकती हूँ। कैन डू ऐनीथिंग एबाउट इट। मैं आपका प्रोग्राम देख रही हूँ सामने से बैठकर और मैं कहूं कि ये नहीं पहनना चाहिए था ये पहनना चाहिए था, ये सेट ऐसा नहीं ऐसा होना चाहिए था। आप इस संबंध में कुछ कर सकते हैं। नहीं। हम उस चीज़ के बारे में सोचना शुरू कर देते हैं जो मेरे नियंत्रण में ही नहीं है।

प्रश्न:- लेकिन हमारा अपना ओपीनियन सही तो होता है।

उत्तर :- दैट्स ओ.के., दैट्स फाइन, आप सही हैं। आप बस बैठें हैं और यहां आपका माइंड लगातार वो थॉट्स क्रियेट कर रहा है, उन चीजों के बारे में जो आपके कंट्रोल में नहीं है। क्या इसे हम उपयोगी एनर्जी कहेंगे...? नहीं।

प्रश्न:- नहीं, ये तो हो ही नहीं सकता है।

उत्तर:- इट्स ए ड्रेन। आपका ड्रेन शुरू हो गया। जो स्टिलनेस थी वो आपका ड्रेन शुरू हो गया। क्योंकि आप एक-एक वो थॉट क्रियेट कर रहे हैं जो आपके कंट्रोल में नहीं है।

प्रश्न:- वास्तव में इससे और मुझे आदत भी पड़ती जायेगी।

उत्तर :- यही चीज़ तो फिर व्यवहारिक जीवन में आयेगी ना। ये बिल्कुल वही चीज़ फिर रोज के ड्रामा में होती है। जो टेलीविज़न के ड्रामा के साथ पहले प्रैक्टिस होती है, वही चीज़ फिर आदत बन जाती है, फिर वही चीज़ हमारे प्रतिदिन के जीवन में आती है। इसकी तीन अवस्था होती है। पहले स्टिलनेस, फिर जजमेंटल और तीसरा तो पूरी तरह से इन्वॉल्व। और जब पूरी तरह से इन्वॉल्व हो गयी तब तो अपनी थॉट क्रियेट करने की जो मेरी अपनी क्षमता है वह भी मैं भूल गयी। मेरी थॉट की पावर मैंने टोटली उस प्रोग्राम को दे दी। अब यह इसलिए कि मैं वह हर रोज करती हूँ। ऐसा नहीं कि मैं मूवी को एक बार ही देखती हूँ। मैं टी.वी. देख रही हूँ कभी-कभी नहीं। हम रोज कर रहे हैं। तो कोई भी चीज़ जो रोज करेंगे तो वो मेरी आदत बन जाती है। अब जो हमने पिछली बार भी देखा कि गुस्सा अगर सिर्फ ऑफिस में ही कर रहे हैं ये सोचकर कि गुस्से से काम होता लेकिन अगर वो मेरी हैबिट बन जाती है तो वो हैबिट मेरे साथ हर जगह जायेगी। अब ये था जब शुरू किया था बैठकर देखना मैं एक डिटैच ऑबज़र्वर या साक्षीदृष्टा थी लेकिन आधे पौने घंटे के अंदर-अंदर मैं उस ड्रामा के अंदर पूरी तरह से घुस गयी। अब यही चीज़ फिर सारा दिन होती है, क्योंकि अब मुझे आदत पड़ गयी है। अब धीरे-धीरे तो वो साक्षीदृष्टा कैसे होना है वही आज हमें पता नहीं चलता है और इसलिए आज हमारी भाषा ये हो गयी है कि किसी से लगाव होना तो स्वाभाविक है। डिटैचमेंट का कॉनसेप्ट कम्फर्टेबल नहीं लगता। लोगों को बहुत खराब लगता है कि हम बहुत स्टिल हैं, हम बहुत डिटैच हैं, हमारे ऊपर असर क्यों नहीं पड़ रहा। लेकिन ये जो प्रभाव पड़ने की आदत है वो मन से पड़ती है। V

सोल कॉन्शेस की अनुभूति से अवगुण, कमज़ोरी और विकारों को खत्म करो

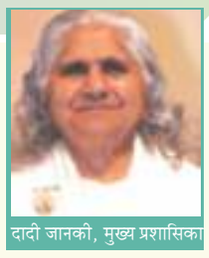
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

पहले ओम् शान्ति में शान्ति, दूसरी ओम् शान्ति में शक्ति, तीसरी ओम् शान्ति में मुस्कुराहट क्योंकि मुस्कुराने की शक्ति चाहिए, हर बात अन्दर ही अन्दर प्रैक्टिस करो। जब बाबा की शक्ति मिलती है तो हर वक्त मुस्कुराते हैं। ठीक है, बाबा बैठा है। मुझे जो बाबा सिखाता है वही करना है। शान्ति है तो शक्ति है, शक्ति है तो चेहरा मुस्कुराता है। मुस्कुराने में नैचुरली बाबा की याद भी है और ज्ञानी तू आत्मा का मुख्य लक्षण है हर्षितमुख। ज्ञान कहता है माना समझ कहती है, बाप को याद करो या याद में रहो।

मधुबन हमारे माँ-बाप का घर सो हमारा घर है। यह गॉड फादर की यूनिवर्सिटी भी है, जहां स्वयं परमात्मा पढ़ाता है, मैं पढ़ रही हूं, स्टूडेन्ट हूं। यह हॉस्पिटल भी है एवरहेल्दी, एवरवेल्दी, एवरहैप्पी रहने की। तो यह घर भी है, यूनिवर्सिटी भी है, हॉस्पिटल भी है। फिर यह बड़े से बड़ा तीर्थ स्थान है, जहां खाना, पहनना, बोलना बड़ा शुद्ध है।

ज्ञान भी कहता है बस- मैं आत्मा, परमात्मा का बच्चा। बहुत लम्बा चौड़ा ज्ञान नहीं है, इज़ी है परन्तु रियलाइज़ेशन चाहिए। रीयल आइज़ चाहिए अपने आपको देखने के लिए। सोल कॉन्शेस में बुद्धि कैसे काम करती है और बॉडी-कॉन्शेस में कैसे...वास्ट डिफरेंस। इसलिए अन्दर गुप्त पुरुषार्थ करके सोल-कॉन्शेस रहना है। ऐसे ही याद से शक्ति लेते रहने का लिंक जुटा रहे। जैसे मैं बोलूं यह सुनें (ट्रांसलेटर)...सहज है पर वह एक्यूरेट तभी होगा जब बुद्धि मेरी भी अच्छी होगी, तो सुनने वाले की भी अच्छी, ट्रांसलेशन भी अच्छी और आप कैच भी अच्छा करेंगे। तो ज्ञानमार्ग में बाबा बुद्धि अच्छी देता है, जितना आप इस ज्ञान को धारण करेंगे, जीवन में विचार सागर मंथन करेंगे, फिर बोलेंगे, तो सब कहेंगे यह ज्ञान बड़ा अच्छा है, यह बहुत अच्छा सुनाती हैं। यहां रियलाइज़ेशन से, प्राप्ति से शब्द निकलते हैं। जैसे डॉक्टर ऑपरेशन करता है तो इंजेक्शन पहले लगाता है। तो बाबा ऐसा अच्छा प्यार भरा इंजेक्शन लगाके, अशरीरी बनाके शिक्षायें देता है ताकि जो हमारे में कमी-कमज़ोरी है वो चली जाए। जो अवगुण है वो चला जाए।

एक है विकार, दूसरा है अवगुण, तीसरी है कमज़ोरी। कहेंगे विकार नहीं है अभी, समझा है कि काम-क्रोध-लोभ–मोह-अहंकार यह तो रावण राज्य में होता है। इसके सिवाय और भी पाँच विकार हैं जो गुप्त उनको साथ देने वाले हैं वह है ईर्ष्या, सूक्ष्म संस्कारों में भी ईर्ष्या...होगी, आवेश भी होगा। मीठापन नहीं होगा। ईर्ष्या, आवेश, आलस्य, अलबेलाई, बहाना...फिर एक्सक्यूज़ करते समय गंवाना। तो सोल-कॉन्शेस के रियलाइज़ेशन से उपरोक्त दसों ही बातें खत्म हो जाती हैं क्योंकि ज्ञान से योग लगा, कनेक्शन ऑलमाइटी से हुआ। माईट आई, तो मोटे हैं, छोटे हैं, सूक्ष्म हैं, अवगुण हैं या कमी है, सब खत्म। क्यों, कैसे खत्म हुए? मुझे सर्वगुण सम्पन्न बनना है यानि सब गुण हों। कोई भी अवगुण न हों। पहले चाहिए सुख, शान्ति, प्रेम। अगर सुख होगा तो शान्ति होगी, प्रेम होगा तो मेरे को किसी का अवगुण दिखाई नहीं पड़ेगा। सबके गुण बहुत अच्छे हैं।

एक दो को देख आत्मिक दृष्टि-वृत्ति हो क्योंकि सभी आत्मायें हैं, परमात्मा के बच्चे हैं, हम एक परमात्मा बाप के घर के रहने वाले हैं। यहां आये हैं पार्ट बजाने के लिए, अभी वापस घर जाना है। अभी जो पार्ट है ना वह कलियुग को खत्म करने का और सतयुग को लाने का पार्ट है, यानि सच्चाई को लेने का है, झूठ को खत्म करना है। झूठ और हिंसा को खत्म करने के लिए व्यक्तिगत हर एक को सच्चाई और अहिंसा से काम लेना है। न दु:ख देना, न दु:ख लेना, सच्चाई और प्रेम से चलना, यह है लाइफ। लाइफ ऐसी हो जो औरों को भी लाईट दे। कईयों को महसूस होता है, यहां आने से लाइफ चेंज हो गई। लाइफ में जो अंधकार था, दुनिया में रहते क्या करना है, यह समझ में नहीं आता था, पर अभी लाइफ में लाईट मिली, समझ में आ रहा है। बिना लाईट के लाइफ क्या? जब मेरे को लाईट मिली, तो मेरा फर्ज कहता है कि औरों को भी लाईट मिले। यही हमारी भावना है।

मन्सा सेवा से वायुमण्डल चेंज कर समय को समीप लाना है

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

प्रश्न: वर्तमान समय प्रमाण हमारा सबका पुरुषार्थ कैसा होना चाहिए? आप हम सबसे क्या चाहती हैं? हम किस बात का ध्यान रखें?

उत्तर: समय अनुसार बापदादा हम बच्चों से यही चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा एवररेडी रहे क्योंकि विनाश को सामने नज़दीक लाने के हम ही निमित्त हैं। हम पहले अपने को सम्पूर्ण बनायें। अभी हर एक का यही लक्ष्य होना चाहिए कि बाबा ने जो मुरली में कहा वह हमें करना ही है। फिर रात को अपना चार्ट देखना चाहिए कि आज हमने बाबा के कहे अनुसार किया या नहीं किया? बाकी क्या पुरुषार्थ करुं, कैसे करुं...यह क्वेश्चन नहीं है। बाबा जो कहता है वही करना है, तो हम भी खुश, बाबा भी खुश, परिवार वाले भी खुश। तो हमें एक्ज़ैम्पल बनना है - बाबा ने कहा और हमने किया।

प्रश्न: किन बातों में हमें एवररेडी रहना है?

उत्तर: एक तो अपनी अवस्था सम्पूर्ण बनानी है। कभी कुछ भी हो जाए, कैसा भी समय अचानक आ जाये, हम यह न कहें हम तो तैयार नहीं हैं, इसके लिए हमें अपनी अवस्था बाप समान बनानी है। जो अभी तक अन्दर चलता है कि यह होना चाहिए, यह नहीं होना चाहिए...वह सब खत्म करके हम बाप समान बन जाएं, यही लक्ष्य रखना चाहिए।

प्रश्न: दिन-प्रतिदिन वायुमण्डल बिगड़ता जा रहा है, उसे कैसे चेंज कर सकते हैं?

उत्तर: वायुमण्डल को बदलने के पहले हम अपने को बदलें ताकि वायुमण्डल का असर मुझ पर न हो। फिर संगठन में सेवा करनी है। डबल पावरफुल बनकर सबको परिवर्तन होने में सहयोगी बनना है। लेकिन इसमें पहले मैं। पहले मुझे बाप समान बनना है फिर सबको बनाना है।

हम कैसे भी वायुमण्डल को अपनी चलन से, योग से और मन्सा सेवा से बदल सकते हैं। मन्सा में जितनी शुभ भावना होगी उतना हमको सेफ रखेगी, कैसे भी वायुमण्डल का असर हमारे ऊपर नहीं आयेगा। फिर जितना जिसको ठीक कर सकते हैं उतना करें। आजकल वाचा से कोई सुधरते नहीं हैं, इसके लिए मन्सा बहुत शक्तिशाली शुभ भावना से सम्पन्न चाहिए। ऐसे नहीं सोचो यह तो सुनने वाला ही नहीं है, यह तो बदलने वाला ही नहीं है। अपनी मन्सा से शक्तिशाली वायुमण्डल बनाओ।

यह भी नहीं सोचो कि ऐसे वातावरण को बदलना मेरे हाथ में नहीं है, जितना कर सकते हो उतना करो ज़रूर। जो भी आपके कनेक्शन में हैं, जिसको कुछ कर सकते हो उसे करो। पहले ऐसे उमंग-उत्साह वालों का ग्रुप बनाओ। भले दो तीन हों लेकिन सभी उमंग-उत्साह वाले हों। ग्रुप में एक भी कमज़ोर होगा तो वह संगठन को कमज़ोर बनायेगा इसलिए भले छोटा संगठन हो लेकिन सभी शुभचिंतक हों। ताकि वह खुद व्यर्थ के वातावरण से सेफ रहें। ऐसे नहीं सोचो यह तो असम्भव है। सम्भव करके दिखाओ।

प्रश्न: जो भी हमारे ईश्वरीय नियम/कायदे हैं, अभी कईयों को उनका पता ही नहीं है, जो आता है करते रहते हैं? क्या उन्हें ठीक किया जा सकता है?

उत्तर: ऐसे लोगों को ठीक करने के लिए इशारा देना चाहिए। दादियों से समय लेकर उन्हें मिलाना चाहिए क्योंकि अभी वृद्धि होती जाती है, बातें भी बहुत बढ़ेंगी। यह सब तो होना है। लेकिन आप जो निमित्त हो, उन्हें बड़ों से मिलाकर इशारा दिलाना चाहिए। बड़ों के आप साथी बनो। ऐसे नहीं सोचो बड़े करते तो कुछ नहीं हैं। आप उन्हें सुना दो, फिर सहयोगी बनकर रहो। इसमें बाबा भी क्या करेगा? बाबा मुरली चलाता है, इशारा देता है...कैच करने वाला करे।

प्रश्न: दादी आप जैसी न्यारी प्यारी अवस्था हम कैसे बनायें?

उत्तर: कोई भी बात होती है, आप भी साक्षी स्थिति में रहने का अभ्यास करो। बाबा को साथी बनाकर रखो। कुछ भी देखते सुनते न्यारे प्यारे हो जाओ। जितने भी निमित्त हैं, सूक्ष्म वायब्रेशन से वायुमण्डल को शक्तिशाली बनायें। अभी कहने का समय रहा ही नहीं है। कोई गलत कर रहा है, उसे कहे कौन! इसलिए बाबा कहता है मन्सा पावरफुल बनाओ। मन्सा से टोटल वायुमण्डल चेंज करना, अभी इसकी आवश्यकता है। हर एक डिपार्टमेंट में कोई न कोई बात है ही। उनको वाणी द्वारा ठीक नहीं कर सकते। किसी को कोई बात कहो कि यह गलत है, तो वह बात मानने की उसमें ताकत ही नहीं है। वाचा से कुछ नहीं होगा इसलिए मन्सा से परिवर्तन करो। मतलब मन्सा शक्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

प्रश्न: मन्सा सेवा कैसे करें?

उत्तर: अपने अन्दर लक्ष्य रखें कि मुझे वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाना है। हर एक समझे मैं ज़िम्मेवार हूं। मन्सा सेवा तो सभी कर सकते हैं। लेकिन मन्सा सेवा के लिए भी मन्सा बड़ी शुद्ध चाहिए। मन्सा क्लीन और क्लीयर चाहिए। मन्सा सेवा के लिए किसी विशेष व्यक्ति को सामने नहीं लाना है, बेहद में यह सेवा करनी है। मन में उमंग आये कि मुझे यह करना ही है तो हो जायेगा। और बातों के विस्तार में न जाकर अभी विशेष मन्सा सेवा पर सभी को अटेन्शन देना चाहिए।

प्रश्न: हमें बाप समान बनना है। हमें ब्रह्मा बाबा समान बनना है या शिव बाबा समान? इस नये वर्ष में हम अपने पुरुषार्थ को तीव्र बनाना चाहते हैं, प्लीज़ गाइड करें।

उत्तर: जो बाप समान बनेंगे, वही साक्षात्कार मूर्त बनेंगे। कुछ बातों में हमें शिव बाबा को फॉलो करना है व कर्म क्षेत्र पर लौकिक जीवन में ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना है। हमें शिवबाबा सम निराकारी बनना है व ब्रह्मा बाबा समान तपस्वी, निरहंकारी व सम्पूर्ण पवित्र बनना है। संसार में ब्रह्मा बाबा किस तरह अचल अडोल, सम्पूर्ण समर्पित व सम्पूर्ण पवित्र बने - इसे जानकर फॉलो करना है। उनकी दृष्टि सबके लिए कैसी थी, उनकी वृत्ति पदार्थों के लिए कैसी थी, वे कितने उपराम थे, उनका चित्त कितना शुभ-भावनाओं व प्रेम से भरपूर था, इसे भी फॉलो करना है।

वे मैं और मेरे के सम्पूर्ण त्यागी थे। सहनशीलता की मिसाल थे, मेरा कुछ भी नहीं, मैं कुछ भी नहीं करता - यह उनकी नैचुरल वृत्ति थी - इसे भी फॉलो करना है।

हमें ब्रह्मा बाबा समान फरिश्ता बनना है। बिना 8 घण्टे योग के कोई भी इस स्थिति को प्राप्त नहीं कर सकता। बहुत अधिक अशरीरी-पन व आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करते रहें। चारो सब्जेक्ट में फुल अटेन्शन देना पड़ेगा। जैसे बाबा को भविष्य का नशा था, वैसा ही नशा व 5 स्वरूपों का अभ्यास करें। साथ साथ इस स्वमान में स्थित हो जाएं कि मैं बाप समान हूं और फिर चिन्तन करें - मैं बाप समान हूं तो मुझे कैसा होना चाहिए।

प्रश्न: ब्रह्मा बाबा को भविष्य का बहुत नशा था, क्योंकि उन्हें अपने भविष्य का पता था, परन्तु हमें तो पता नहीं है, फिर हमें वह नशा कैसे रह सकता है?

उत्तर: ब्रह्मा बाबा को तो कई बार भविष्य के नशे में एकान्त में डान्स करते देखा गया था। यह सत्य है कि शिवबाबा ने उन्हें उनके अनेक जन्मों का साक्षात्कार करा दिया था, परन्तु हम भी अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ से अपने भविष्य को जान सकते हैं। आप अपना भविष्य या अपना नम्बर फिक्स कर दें, उसे कई बार रोज़ याद करें व उसके नशे व खुशी में डान्स करें। यदि आपको उसमें सम्पूर्ण विश्वास होगा तो वही पद आपको मिल जाएगा। यदि यह भी न हो तो कम से कम हम देवता बनेंगे यह तो मालूम है ही, उसके नशे में रहो तो दिव्य संस्कार जीवन में आ जाएंगे।

प्रश्न: ब्रह्मा बाबा का कोई एक श्रेष्ठ पुरुषार्थ हम जानना चाहते हैं ताकि हम भी उसे अपना सकें। और उस पुरुषार्थ को करने की विधि क्या है?

उत्तर: अव्यक्त में एक दिन शिव बाबा ने बताया कि ब्रह्मा बाबा नम्बर वन आत्मा इसलिए बने क्योंकि मैं-पन छोड़ने में नम्बर वन रहे। जबसे शिव बाबा ने उन्हें अपना माध्यम बनाया, उन्होंने स्वयं को पूर्णत: प्रभु हवाले कर दिया था।

एक बड़ी गॉडली गिफ्ट उन्हें शिव बाबा की ओर से यह मिली थी कि जैसे ही शिव बाबा ने उनके तन में प्रवेश किया तो अपनी पवित्र किरणें उनके तन में फैलाकर उनकी कर्मेन्द्रियों को शीतल कर दिया क्योंकि शिवबाबा पवित्रता के सागर हैं, उन्हें अति पवित्र तन चाहिए था।

मन की बातें
-ब्र.कु सूर्य

हम भी चेक करें - कहां मैं-पन है? मैं घर का बड़ा हूं, मैं बाप हूं, मैं माँ हूं, बच्चों को मेरी बात माननी चाहिए। मैं बुद्धिमान हूं या इन्चार्ज हूं - मेरे पास बहुत डिगरी है, मैं बहुत समय से ज्ञान में हूं या मैंने बहुत सर्विस की है। मैं-पन की 100 बातें हो सकती हैं। अपने में मैं-पन को पहचान कर स्वमान के अभ्यास द्वारा उसे समाप्त करें। यह अच्छी तरह जान लें कि संगम युग पर ईश्वरीय शक्तियों द्वारा ही सब कुछ हो रहा है। मैं-पन आते ही हमारी दिव्यता व शक्तियाँ कम हो जाती हैं। यदि हमें स्मृति रहती है कि बाबा की शक्तियों से ही सब कुछ हो रहा है तो उनकी शक्तियाँ हमारे साथ काम करती रहती हैं।

प्रश्न: सुना है ब्रह्मा बाबा अन्त में ऐसी स्थिति में रहते थे कि कईयों ने देखा कि वे धरती से ऊपर हैं। क्या हम ऐसी फरिश्ता स्थिति नहीं पा सकते? यदि हाँ तो हमें क्या करना होगा?

उत्तर: सन् 1968 ब्रह्मा बाबा की गहन तपस्या का वर्ष था। वे अति अन्तर्मुखी रहते थे और निरंतर योग-युक्त थे। इसी कारण से वे सम्पूर्ण फरिश्ता बन गये थे। उनका देह भी अति कोमल व निर्मल बन गया था। कईयों को वे फरिश्ता दिखते थे और बस तभी वे देह छोड़कर अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता बन गये और अब बाप समान स्वरूप में रहकर 45 वर्ष से विश्व की महान सेवा कर रहे हैं। वे भगवान के साथी बन गये। उनके पास भी वे ही शक्तियाँ आ गई और अब वे सब को फरिश्ता बनाने में संलग्न हैं।

फरिश्ते ही अब अन्त में विश्व की महान सेवा करेंगे। उनके द्वारा ही सर्व धर्मों की आत्माओं को प्रभु-सन्देश मिलेगा और विनाश काल में सर्व को श्रेष्ठ सकाश मिलेगी। जहां तहां उनके साक्षात्कार होंगे, उनके द्वारा ही सबकी सुरक्षा होगी व सबको सहारे की अनुभूति होगी।

हमें भी यदि उन जैसा फरिश्ता बनना है तो स्वयं को डबल लाइट, उपराम, अनासक्त, स्वमानधारी व कर्मयोगी बनाना होगा। कर्मयोगी बने बिना कोई भी विदेही नहीं बन सकेगा।

डबल लाइट माना आत्मिक ज्योजि स्वरूप में स्थित रहना और मन से बहुत हल्के रहना। उपराम अर्थात कर्म करते हुए व संसार में रहते हुए इसके आकर्षण से परे रहना। निरन्तर स्वमान व ज्ञान के चिन्तन में रहना। साथ साथ फरिश्ता सो देवता बनने का अभ्यास अथवा ये रुहानि ड्रिल बहुत करनी होगी।

प्रश्न: मेरा प्रश्न है कि दादी हृदयमोहिनी के तन में ब्रह्मा बाबा आते हैं या शिवबाबा या दोनों? और ये अव्यक्त पार्ट कब तक चलेगा? क्या हम रोज़ प्रभु मिलन का अनुभव नहीं कर सकते?

उत्तर: दादी जी के तन में बाप-दादा दोनों ही आते हैं। जब तक पुरुषोत्तम संगमयुग है, दोनों का पार्ट साथ ही चलता है, अकेले अकेले वे पार्ट बजाते ही नहीं।

बाबा ने अव्यक्त पार्ट के प्रारम्भ में ही बता दिया था कि जब तुम देखो कि बाबा आते हैं और केवल दृष्टि देते हैं, मुरली नहीं चलाते, तब समझ लेना कि अव्यक्त पार्ट समाप्ति की ओर है।

पार्ट तो समाप्त होना ही है क्योंकि बाबा को अपना कार्य सम्पन्न भी तो करना है। वो चाहते हैं, मैं लम्बे काल से तुम्हारे पास आ रहा हूं, अब तुम मेरे पास आओ। बाबा कुछ ही वर्ष में अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ कुछ आत्माओं को देकर स्वयं वतन में बैठकर स्थापना व विनाश के शेष कार्य को सम्पन्न करेंगे। और फिर उन श्रेष्ठ अष्ट रत्नों व विजय माला के पहले कुछ रत्नों के द्वारा सृष्टि पर जय जयकार का पार्ट चलेगा।

प्रतिदिन सवेरे सूक्ष्म वतन में जाकर बाप-दादा से दृष्टि लें, उनके साथ रास करें, उनसे तिलक लेकर वरदान लें। उनसे रूह रिहान करें व सच्चे मन से उनका शुक्रिया करें। इससे मिलन का श्रेष्ठ अनुभव होगा। परन्तु ये अनुभव वही कर सकेंगे जो निर्मल, निरहंकारी व बहुत पवित्र होंगे व जो सारा दिन कुछ न कुछ अभ्यास करते हुए व्यर्थ से मुक्त रहेंगे।

contact - Email :-
bksurya8@yahoo.com

अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओम शान्ति मीडिया

परमात्मा का अवतरण भारत में...।

आर्यावर्त भारत देश का सर्वप्रथम सम्बोधन है, जिसका अर्थ है जहां श्रेष्ठ लोगों का निवास हो। अब ऐसे युग में जहां कलियुग नहीं करयुग का जमाना है, वहां श्रेष्ठ मानव की कल्पना भी नहीं की जा सकती। चार श्रेष्ठ युग; सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर तथा कलियुग, क्रमशः स्वर्णकाल, रजतकाल, कांस्ययुग तथा लौहयुग के नाम से भी जाना जाता है। इन्हीं चार युगों की समान आयु का जोड़ एक कल्प बनता है। आज कलियुग उस गृहयुद्धों को दर्शा रहा है, जिससे महाभारत की सम्पूर्ण स्थिति हमारे सामने आ रही है। इसी स्थिति को शास्त्रगत नियमों के अनुसार - परमात्मा कहते हैं जब विश्व की ऐसी मनोदशा होगी, उसी समय वह इस सृष्टि रंगमंच पर अवतरित होकर सभी आत्माओं का शुद्धिकरण कर उसे फिर से दिव्यता प्रदान करेगा। यही वह समय है, खोलिए उन नयनों को जो उसे ढूंढ़ रही हैं, क्योंकि वह आ चुके हैं भारत में।

शान्ति की तलाश में अनेक प्रयास करने के बावजूद भी मनुष्य न ही शान्ति और न ही सुख को प्राप्त कर सका। विश्व शान्ति की स्थापना का कार्य परमपिता परमात्मा का कर्तव्य है। वे ही शान्ति की स्थापना करते हैं। जब वो आते हैं तो करोड़ों में से कोई ही उसे जानते व पहचानते हैं। परमात्मा कब, कैसे और कहाँ आते हैं ? और कैसे कर्तव्य करते हैं ? यह जानना आवश्यक है। उसीका यादगार शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। शिव के अवतरण में रात्रि का क्या है संबंध? संसार के सभी ईश्वर-विश्वासी लोग मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी है और इसलिए इस धरा पर अवतरित होते हैं लेकिन जब वो अवतरित होते हैं तो उसको शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्रायः जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयन्ती ऐसी है जिसे जन्मदिन न कह शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका जन्म अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह लौकिक या साधारण नहीं होता है, कि उनका जन्मदिन मनाया जाए।परमपिता शिव की जयन्ती संज्ञावाचक नहीं बल्कि कर्तव्य वाचक है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त, अज्ञान निद्रा में सोये हुए मनुष्यों को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिव रात्रि को अज्ञान अंधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के महा परिवर्तन से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके, दुःख और अशान्ति को हरा था वहीं से सतोप्रधान, श्रेष्ठ और मर्यादा-पुरुषोत्तम दुनिया का आरंभ हुआ था।

भगवान हमारा हो सकता है क्या? क्या वह हमारी बातें सुन सकता है? कहते हैं कि कभी न कभी, किसी न किसी समय या किसी युग में उसने हमारी बातें भी सुनी, तो सुनी बातों का एक टुक जवाब भी दिया, लेकिन हमारी आज की कलुषित मानसिकता तथा कुछ भी तुरन्त प्राप्त कर पाने की इच्छा, उस परमशक्ति को भी चमत्कारिक रूप से अनुभव करने की है। ऐसा भी हो सकता है, यदि आप सुनियोजित तरीके से उसे सुनने वा देखने का प्रयास करें।

आज मैं जो कुछ आपसे कहने जा रहा हूं, उसे अपने चर्म चक्षु से नहीं, दिव्य चक्षु से देखने का प्रयास करें।

कैसे शुरु करता है वो अपना कार्य ?

सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित श्लोक "यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवती भारत्, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम" के अनुसार परमात्मा ने इसके यथार्थ अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि जब धर्म की अति ग्लानि, अति पापाचार-भ्रष्टाचार इस सृष्टि पर अपने चरम पर पहुंच जाता है तब मैं इस भारत देश में एक साधारण मनुष्य तन में अवतरित होता हूँ। गीता में दिए गए अपने वचन को पूरा करने के लिए परमपिता परमात्मा शिव ने कर्य शुरु किया।

प्रजापिता ब्रह्मा की हुई दिव्य रचना

1876 में कृपलानी कुल में जन्मे दादा लेखराज का नामकरण करते हुए परमपिता परमात्मा शिव ने ही उन्हें "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम दिया। इसके बाद 1936 में सिंध हैदराबाद स्थित दादा लेखराज के तन में 60 वर्ष की उम्र में प्रवेश किया। उनके मानवीय तन के माध्यम से संसार की समस्त आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्हें पतित से पावन, मनुष्य से देवता बनाने का कठिनतम कार्य शुरू कर दिया। एक ओर नई स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना और

दूसरी ओर पतित, पुरानी दुनिया को परिवर्तन करने यानि दोनों कार्यों को सम्पन्न करने का काम साथ-साथ जारी है। अब परमपिता परमात्मा कलियुगी पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया को सतयुगी पावन, श्रेष्ठाचारी नई दुनिया में परिवर्तन करने का कार्य सम्पन्न कर वापस परमधाम लौटने की ओर अग्रसर हैं साथ-साथ सभी आत्माओं की अब रिटर्न जर्नी है।

समय की गति को पहचानो

कलियुग अभी बच्चा नहीं बल्कि इसका समय समाप्त होकर वर्तमान समय जारी पुरुषोत्तम संगमयुग का समय भी खत्म होने की दिशा में अग्रसर है। परमात्मा से सुख-शांति की ईश्वरीय विरासत (वर्सा) लेने का समय बहुत थोड़ा बचा है। अब भी इस स्वर्णिम अवसर का लाभ लेने की बजाय यदि आपने इसे गंवा दिया तो सिवाय पछताने के आपके हाथ कुछ लगने वाला नहीं है, क्योंकि विश्व परिवर्तन का महानतम कार्य अब समाप्त होने वाला है। इसके स्थान पर इस भारत देवभूमि पर सर्वोत्तम संस्कृति और सभ्यता वाला नया भारत अपना स्थान ग्रहण करने के लिए बेताब है।

परमात्मा शिव कौन?

हम मानते हैं भारत देश में तेंतीस कोटि देवी देवता हैं, परन्तु इन सभी को बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा शिव है, जिनकी अनेक धर्मों में, अनेक रूपों व अनेक नामों से पूजा की जाती है परन्तु उसका केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव के पास ही आकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव हैं। परमात्मा जन्म मरण से न्यारे हैं, उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता, ज्ञान के सागर हैं, प्रेम के सागर, सुख के सागर हैं, उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा शिव परमधाम के निवासी हैं। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया है।

कैसा रूप है उनका ?

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी

तथ्य परमात्मा के सम्बन्ध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के सम्बन्ध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और तृष्णा का जन्म हुआ है।

यह संसार भ्रम संसार बन गया है। इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योर्तिबिन्दु है। सोमनाथ के मन्दिर में सर्व प्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थाई रूप से मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य प्रवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृतिमें अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें हिमालय स्थित केदारनाथ, काशी में विश्वनाथ, सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

मैंने परमात्मा से सारे सम्बन्धों का रस लिया

विश्व कल्याणकारी शिव, मेरा बाबा है। भाग्यवान हैं जो भगवान हमको इतना ऊंचा पुरुषार्थ 21 जन्मों की ऊंची प्रालब्ध लेने के लिए संगमयुग पर ब्रह्मा तन में अवतरित होकर करा रहा है। मैं अकेली नहीं हूँ, भगवान मेरा साथी है। परमात्मा ने हमें हर एक सम्बन्ध का सुख दिया है। हम उसे जिस रूप में याद करते हैं वो उस रूप में हमारे साथ होता है। बाबा ने जन्म से मरने तक हमें कर्मों की गुह्यगति समझाई है। कर्म विकर्म अकर्म की गति बाबा का बनने से समझ में आई है। मुझे जीना है तो कैसे? मरना है तो कैसे? यह पक्का है। बाबा का बनने से ही जैसे शमा पर परवाना फिदा हो गया, मरजीवा जन्म है। इतने अच्छे कर्म बाबा ने सिखाये हैं, ब्रह्माबाबा कहता है शिवबाबा को याद करो और शिवबाबा कहता है ब्रह्माबाबा को फॉलो करो। अभी के हमारे कर्म 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। परमात्मा शिव हम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त लाए हैं। अभी ही समय है पुरुषार्थ कर उस बहिश्त के अधिकारी बनने का। परमात्मा कहते हैं अभी नहीं तो कभी नहीं।

राजयोगिनी दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

ब्रह्माकुमारी संस्था सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण करती है

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूं। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत इन्सान बनाने का कार्य कर रही है।

-अन्ना हज़ारे, प्रसिद्ध समाजसेवी

कहाँ रहते हैं भगवान हमारे ?

मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मानना सबसे बड़ी भूल

परमात्मा को जहां त्रिमूर्ति (तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकालदर्शी (सृष्टि के आदि, मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो उसे त्रिलोकीनाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। अतः तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।

मनुष्य सृष्टि

मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों की ही सृष्टि है जिसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं। यहां मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला अथवा लीलाधाम, जिसमें कि सूर्य और चांद मानो बड़ी-बड़ी बत्तियां हैं, भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा कर्म तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परमात्मा के दिव्य कर्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं।

अव्यक्त लोक - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर पुरियां

सूर्य-चांद से भी पार इस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मापुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर की पुरी है। इन तीनों देवाताओं की पुरियों को मिलाकर इसे सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं है। बल्कि सूक्ष्म, प्रकाश तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को, इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है।

आत्माओं का निवास स्थान - परमधाम

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पांच प्राकृतिक तत्वों क्रमशः पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सृष्टि की

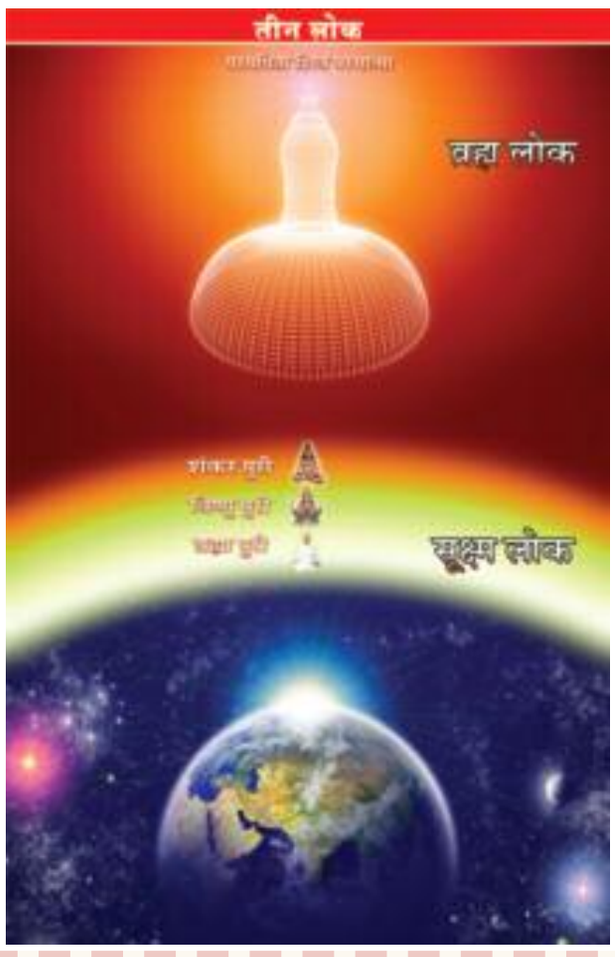

सभी आत्माएं अव्यक्त वंशावली में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक में आकर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय करने के लिए उपस्थित होती है। प्रायः दुःख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं।

परमात्मा शिव ही हैं ज्ञान दाता

परमात्मा शिव, सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हैं और जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हैं। गीता में भगवान ने इस सम्बन्ध में कहा है - ''जो मुझे मनुष्यों की भांति जन्म लेने और मरने वाला समझते हैं वे मूढ़मति हैं'' (अध्याय 6, श्लोक 24, 25)। पुनः वे कहते हैं - ''मेरे दिव्य जन्म के रहस्य को न महर्षि, न देवता जानते हैं'' (अध्याय 10, श्लोक 2)। प्रायः सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से परमात्मा को 'ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप' और 'अशरीरी तथा जन्म-मरण रहित' तो स्वीकार करते ही हैं। अतः शिव का अन्य भाषान्तर 'गॉड', 'खुदा', 'ओंकार' इत्यादि है और 'शिवरात्रि' परमात्मा के दिव्य-अवतरण दिवस की यादगार है।

सर्वत्र है उस नटराज शिव की महिमा

भगवान नटराज हैं, अर्थात् नट की तरह अपनी ऊँगली के ईशारे पर सभी को नचाने वाला। उस नटराज को सभी ने माना तो सही पर जाना नहीं। माना भी तो ऐसे, जैसा जिसने कहा ! आइये हम आपको परमात्मा के उन सभी दिव्य नामों से अवगत कराते हैं जिसे सुनकर आपके रोमांच खड़े हो जायें, कि क्या बात है? जिसे हम सुना-अनसुना कर देते थे, उन नामों के अर्थों में इतनी गुह्यता है !

ईसा मसीह ने परमात्मा को "दिव्य ज्योति" कहा

ईसा मसीह (जीज़स क्राइस्ट) ने गॉड को लाइट कहा है। उन्होंने कहा है, गॉड इज़ लाईट, आई एम द सन् ऑफ गॉड। जीज़स ने कभी यह नहीं कहा कि आई एम गॉड। उसने भी उस लाईट को परमात्मा का स्वरूप बताया। ओल्ड टेस्टामेंट में दिखाया गया है कि जब हज़रत मूसा शिनाई पर्वत पर गए तो वहां पर उन्हें परम ज्योति का साक्षात्कार हुआ जिसको देखते ही हज़रत मूसा ने कहा जेहोवा। उस तेज को नाम दिया जेहोवा और उस प्रकाश ने उसको दो पत्थरों पर दस आदेश दिए जो आज भी उनके ओल्ट टेस्टामेंट में लिखे हुए हैं। चर्च में जाएंगे तो वहां पर हमें मोमबत्तियां मिलती हैं। उसमें भी एक बड़ी मोमबत्ती होती है। बाकी सब छोटी मोमबत्तियां होती हैं। बड़ी मोमबत्ती परमात्मा का प्रतीक है। छोटी मोमबत्तियां आत्माओं का प्रतीक है।

"बालेश्वर" शिव को यहूदियों ने भी पूजा

थाइलैंड में भी एकोनिस और ऐस्टर्रिग्स नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को बेलफेगो कहते हैं। ये लोग शिवलिंग की स्थापना करके बाल नाम से पूजते हैं।

भारत में भी शिवलिंग के अनेक मन्दिर बालेश्वर नाम से हैं। ये लोग बाल अथवा बालेश्वर की मूर्ति के सामने धूप-दीप आदि जगाते थे। यहां शपथ को नेम कहते हैं। ये शिवलिंग को सत्य स्वरूप परमात्मा की प्रतिमा मानने के कारण उसके सामने नेम अथवा शपथ लेते थे।

मिस्र ने भी स्वीकारा परमात्मा का अस्तित्व

मिस्र में शिवलिंग की पूजा आईसिस और ओसिरिस नाम से होती थी। ओसिरिस शब्द "ईश" शब्द से बना है। शिवलिंग की प्रतिमा के साथ वे बैल की मूर्ति रखा करते थे।

ईश्वर, भगवान या परमात्मा, शिव के पर्यायवाची नाम हैं। उनके गुणवाचक नामों में हमेशा ईश्वर या नाथ जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। परमात्मा शिव सब मनुष्य आत्माओं के मात-पिता हैं, उनका कोई माता-पिता नहीं है। वे देवों के भी देव महादेव, नटराज हैं। विश्व के विभिन्न धर्मसंस्थापकों एवं मनुष्य आत्माओं ने शिव की परम-सत्ता को अलग-अलग नामों से स्मरण किया है जो उनकी सार्वभौमिकता को सिद्ध करता है। जो सर्वज्ञ, सर्वेश्वर, सर्वमान्य, सर्वशक्तिमान और सर्वोपरी है उसी को परमात्मा कहा जाता है। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी सर्वत्र ज्योतिर्लिंगम के ही मंदिर पाए जाते हैं। भारत से बाहर नेपाल में पशुपतिनाथ, जापान, थाइलैंड, यूनान, मिस्र, बेबीलोन के अलावा अन्य देशों में भी परमात्मा की परिभाषा परम ज्योति, सूर्य के समान तेजोमय प्रकाश के रूप में ही की गई है।

सभी महान् विभूतियों की स्मृति को बनाये रखने के लिए उनके स्मारक चिन्ह, मूर्तियां अथवा मंदिर आदि बनाये जाते हैं। परन्तु संसार में सब मूर्तियों में सर्वाधिक पूजा सम्भवतः शिवलिंग की ही होती है। विश्व में शायद ही कोई देश होगा जहाँ शिवलिंग की पूजा किसी भी रूप में न होती हो। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है-लक्षण। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ-ऐसा पिता जिसके लक्षण कल्याणकारी हों । प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाये जाते थे क्योंकिपरमात्मा का रूप ज्योतिर्बिंदु है। सोमनाथ के प्रसिद्ध मंदिर में सर्वप्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी। यद्यपि आज ईसाई, मुसलमान, बौद्ध तथा दूसरे मतों के लोग शिवलिंग की उतनी और उस रीति से पूजा नहीं करते हैं जैसे कि हिन्दू करते हैं फिर भी ऐसे बहुत से प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में भी विभिन्न धर्मों वाले लोग शिवलिंग को धार्मिक महत्व देते हैं।

शिव, श्रीराम के भी आराध्य

परमात्मा शिव की पूजा रामेश्वरम् के रूप में स्वयं श्रीराम ने भी की है। शिव श्रीराम के भी भगवान हैं। सोचने की बात है कि अगर श्रीराम भगवान होते तो उनको उस निराकार ज्योतिर्लिंगम् की पूजा करने की क्या आवश्यकता हुई? वह जानते थे कि रावण को अपनी जिस शक्ति का अभिमान है वह उसने परमात्मा शिव की तपस्या, आराधना करके प्राप्त की थी। शिव की शक्ति के सामने मुकाबला करने के लिए उस परम शक्ति परमात्मा की शक्ति के बिना वह युद्ध में विजयी नहीं हो सकते। अतः सिद्ध है कि उन्होंने भी शिव की आराधना की थी।

मुस्लिमों के भी हैं नूर-ए-इलाही

भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता तो देते ही हैं परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सम्मान से चूमते हैं। उसे वे संग-ए-असवद कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है? उसको वे लोग नूर-ए-इलाही भी कहते हैं। नूर-ए-इलाही अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम् कहा, ज्योति स्वरूप कहा। ज्योति माना ही तेज। इसलिए मुसलमान जब नमाज़ पढ़ते हैं तो मक्का की दिशा में नमाज़ पढ़ते हैं। जिसको भारत वर्ष में मक्केश्वर कहा जाता है अर्थात् मुसलमानों के अल्लाह, नूर-ए-इलाही कहकर के निराकार को ही याद किया।

यूनान में भी होती है शिव की पूजा

यूनान में जाएंगे तो शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित है। यहां शिवलिंग की पूजा उनके धर्म का प्रधान अंग थी। शिवलिंग के पास ही वे बैल की मूर्ति स्थापित किया करते थे। बैल को सभी देशों में धर्म का सूचक माना जाता है। चूंकि शिव सत्धर्म की स्थापना करते हैं, इसलिए उनका वाहन बैल दिखाया जाता है। यूनान में शिवलिंग को फल्लुस के नाम से याद करते थे क्योंकि वह तुरन्त फल देने वाले परमात्मा की प्रतिमा है।

पारसियों में भी ज्योति स्वरूप परमात्मा की मान्यता

पारसियों के अग्यारी में जाएंगे तो वहां पर होली फायर मिलता है। कहा जाता है पारसी लोग जब ईरान से भारत में आए तो जलती हुई ज्योत का टुकड़ा लेकर आए और उसको कहा कि यह अखण्ड ज्योत है। आज भी नई अग्यारी स्थापन होती है तो वो जलती हुई ज्योत का एक टुकड़ा लेकर वहां स्थापित करते हैं जो सदा जलती आई थी, जो सदा अखण्ड है, परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। तो इस धर्म में ज्योति स्वरूप पिता परमात्मा की ही मान्यता है।

शंकर भी लगाते हैं शिव का ध्यान

तीन आकारी देवताओं ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर का अपना-अपना अस्तित्व है और परमात्मा शिव जो इन तीनों के रचयिता हैं, उनकी सत्ता इनसे भिन्न है। प्रायः लोग शिव एवं शंकर को एक ही सत्ता के दो नाम समझते हैं परन्तु शिव और शंकर वास्तव में एक नहीं हैं। शंकर एक सूक्ष्माकारी रूप वाले देवता है परन्तु शिव निराकारी हैं। शिव कल्याणकारी परम पिता परमात्मा का नाम है और शंकर आकारी देवता हैं जो कि तमोगुणी, आसुरी सृष्टि का विनाश करवाने के निमित्त हैं। कई चित्रों में शंकर और पार्वती को शिवलिंग के सम्मुख बैठा दिखाया गया है जिसमें शंकर, शिवलिंग की ओर संकेत करते हुए पार्वती को भी प्रेरित करते हैं कि वह अपनी योग साधना में शिव का मनन करें। इससे भी शिव एवं शंकर का भेद स्पष्ट प्रतीत हो जाता है। हम देखते हैं कि शंकर हमेशा ध्यान की अवस्था में बैठे होते हैं। इससे स्पष्ट है कि उनके भी कोई आराध्य या देव हैं जिनका वह स्मरण करते रहते हैं। परमपिता परमात्मा शिव, शंकर के भी रचयिता हैं। वह शंकर द्वारा इस आसुरी सृष्टि का विनाश कराते हैं। शंकर जी की ध्यान मुद्रा में योग की वह अवस्था बताई है। अर्धनेत्र खुले और अर्ध पद्मासन या सुखासन का आसन, जिसमें शंकर बैठकर निराकार परमात्मा का ध्यान लगाते हैं। शिव ही सबके आराध्य परमपिता हैं ।

जापान में चिंकोनसेंकी का स्मरण

जापान में शिकोनिज़म सेक्ट वाले तीन फीट की ऊंचाई पर और तीन फीट दूर बैठकर एक थाली में रखे लाल पत्थर पर ध्यान लगाते हैं और इस पवित्र पत्थर को 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते हैं। उसका नाम दिया है चिंकोनसेकी।

चिंकोनसेकी का अर्थ है, जो शान्ति का दाता है, जिसका ध्यान लगाने से शान्ति प्राप्त होती है। वे उसे परमात्मा का स्वरूप मानते हैं। चीन में शिवलिंग को हुवेड-हिफुह कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। फ्रांस में गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। बेबीलोन में शिवलिंग को शिउम् कहा जाता था। मिस्र में भी सेवा नाम से पूजा होती थी। फिजी देश के निवासी शिव को 'सेवा' या 'सेवाजिया' के नाम से पूजते हैं। स्पष्ट है कि ये सभी नाम और सेवाजिया नाम शिव से या शिवजी से बने हैं।

इक ओंकार, सत्नाम

सिखों के धर्म-स्थापक गुरु नानक ने भी परमात्मा को ओंकार कहा है जबकि ज्योतिस्वरूप शिव परमात्मा के एक प्रसिद्ध मन्दिर का नाम भी ओंकारेश्वर है। उन्होंने बड़े स्पष्ट शब्दों में परमात्मा के सत्य स्वरूप का वर्णन किया है। वो निराकार है, निर्वैर है, सतनाम है जिसको काल भी नहीं खा सकता। गुरु गोविन्द सिंह जी के 'दे शिवा वर मोहे' शब्द भी उनके परमात्मा शिव से वरदान मांगने की याद दिलाते हैं। इससे स्पष्ट है कि परमात्मा शिव एक धर्म के पूज्य नहीं बल्कि विश्व की सभी आत्माओं के परमपूज्य परमपिता हैं।

गिरिजाघर का रहस्य

रोम में शिवलिंग को प्रियपस कहते थे। वहीं इटली में गिरजा में शिवलिंग की प्रतिमा रखी जाती रही है। गिरजा शब्द गिरिजा से बना है। गिरिजा का अर्थ पार्वती है। सभी आत्माओं रूपी पार्वतियों के प्रति परमात्मा शिव की प्रतिमा इनमें स्थापित हुई रहती थी। इसलिए चर्च का नाम गिरजाघर है।

कहीं समय न बीत जाये

वर्तमान समय की हालत को देखें तो यह शिव परमात्मा के आने का अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य भी कर रहे हैं। कहीं यह सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। हमें इस परिवर्तन की वेला में स्वयं का परिवर्तन कर अपना भाग्य जगाना है। मनुष्य की वास्तविक उन्नति उसे कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने से ही प्राप्त होती है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचते हुए तू ज्योतिर्बिन्दु शिव से योग लगा।

हाँ, शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए ...

मनुस्मृति में लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में धर्म संहिता में लिखा है कि कालियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ।

वेदों-पुराणों में भी शिव अवतरण की बात कही गई है। शिव पुराण में लिखा है कि भगवान शिव ने कहा- मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रकट होऊंगा। इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रूद्र हुआ। (ये वाक्या शिवपुराण में कोटि रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है) शिव ने ब्रह्मा मुख द्वारा सृष्टि रची। शिवपुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उनके द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना की ।

शिवरात्रि समस्त आत्माओं का त्योहार

इस पौराणिक उल्लेख का भी यही भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के ललाट में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुःख से भरे एवं तमोगुणी हो चुके संसार का कल्याण किया। यदि सभी शिवरात्रि के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों को पूर्ण रूप से समझ जायें तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। शिवरात्रि सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है, लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्व आत्माओं के लिए ही है।

एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग

मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रकट हुआ जो हज़ारों सूर्य के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था। इसी प्रकार शिव पुराण में से भी प्रकाशमान ज्योति के रूप में की गई है।

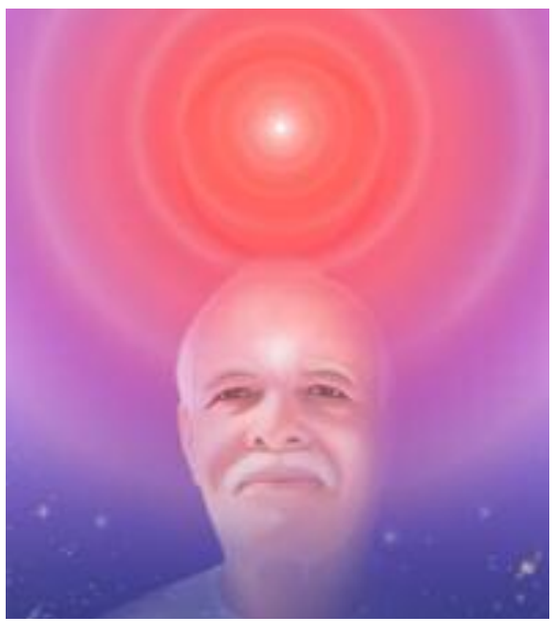

धर्म संहिता में लिखा है कि कलियुग के अन्त में प्रलय काल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था। वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ ।

इस तरह हम देखते हैं कि भारत के सभी वेद-ग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात कही गई है। कहीं उसकी व्याख्या अण्डाकार ज्योति के रूप में, तो कहीं सूर्य

परमात्मा के कार्य में सहयोगी बनो

हे मनुष्य आत्माओं। अब समय आ चुका है विषय-विकारों से मुक्त होकर परमपिता परमात्मा से मंगल मिलन मनाने का। अभी नहीं तो कभी नहीं। ऐसा न हो परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाए और हम देखते ही रह जाएं। समय निकल जाने पर हमारे पास पछतावे के अलावा और कुछ हाथ नहीं रह जाता है। यदि हमें अपने भाग्य को जगाना है और नई सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना के इस कार्य में सहयोगी बनना है, तो परमात्मा शिव के इस महान कार्य में सहयोगी बनना है। परमात्मा शिव के इस महान कार्य में अपना तन-मन-धन सफल कर 21 जन्मों की बादशाही के मालिक बनने का सुअवसर हमारे सामने है।

ज्योति ने प्रकट होकर किया नवयुग का निर्माण

महाभारत में भी लिखा है कि जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।

जेहोवा शिव का ही पर्यायवाची

देखा जाए तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक तोरेत का आरम्भ भी ऐसे ही होता है। सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि काल में परमात्मा ने ही आदम एवं हव्वा को बनाया जिनके द्वारा स्वर्ग रचा। भगवान का नाम जेहोवा मानते हैं जो परमात्मा शिव का ही पर्यायवाची है।

श्रीकृष्ण ने भी किया शिव का पूजन

महाभारत युद्ध के पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में स्वयं श्रीकृष्ण ने भी थानेश्वर-सर्वेश्वर की स्थापना कर उस परमपिता सर्वशक्तिमान्, गुणों के भण्डार, निराकार शिव की पूजा-अर्चना की और उस शक्तियों के दाता से शक्ति प्राप्त कर युद्ध के मैदान में उतरे। श्रीकृष्ण ने पाण्डवों से भी शिव की पूजा करवाई। इसके बाद वह युद्ध के मैदान में उतरे और कौरवों के ऊपर विजय प्राप्त की। शिव को भोलेनाथ भी कहा गया है क्योंकि वह सहज ही प्रसन्न होने वाले हैं ।

देवी-देवता अनेक, परमात्मा हैं एक

शिव किसी एक धर्म या सम्प्रदाय के पूज्य देव नहीं हैं। बल्कि ये सभी अमर आत्माओं के परमपिता - 'अमरनाथ' हैं। आज भारत में देखा जाए तो देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर पर हो गई है, अर्थात् नॉर्थ की तरफ जाएंगे तो श्रीराम, श्री कृष्ण की पूजा मिलेगी। दक्षिण की ओर श्री वेंकटेश्वर या श्री बालाजी अर्थात् विष्णु की पूजा होती है। ईस्ट में काली पूजा, दुर्गा पूजा मिलेगी। वेस्ट में गुजरात एवं महाराष्ट्र की ओर श्री गणेश की पूजा मिलेगी। अर्थात् देवताओं की पूजा क्षेत्रिय स्तर की हो गई, लेकिन शिव की पूजा सारे भारत में होती है।

शिव ही नाथ-शिव ही ईश्वर

आज कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर जानना हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। जैसे परमपिता परमात्मा को ज्योतिर्लिंगम क्यों कहा गया? क्योंकि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप निराकार है जिनका अपना कोई शरीर नहीं है तथा जो सदा ज्योति के समान प्रकाशमान है। परमात्मा को ज्योति स्वरूप का एक लिंग रूप बनाकर मनुष्य के सामने रखा गया ताकि मनुष्य अपनी भावनाएं अर्पित कर सकें, पूजा कर सकें। भारत में भी मन्दिरों के नाम के पीछे भी नाथ या ईश्वर शब्द जुड़ा है क्योंकि वो सर्व का नाथ, सर्व का ईश्वर है। जैसे नाथ के रूप में मान्यता है, भोलेनाथ, बबूलनाथ, विश्वनाथ, सोमनाथ, अमरनाथ आदि। ईश्वर के रूप में गोपेश्वर, विश्वेश्वर, पापकटेश्वर, रामेश्वर, महाकालेश्वर, ओंकारेश्वर आदि।

परमात्म मिलन की कहानी-महानुभावों की जुबानी

आज कलियुग में जहाँ एक ओर समाज में भ्रष्टाचार और कुरीतियों का बोलबाला है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान भी अपने चरम पर पहुँच चुका है। ऐसे में एक तरफ लोग परमात्मा के अस्तित्व को भी नकारने लगे हैं, तो दूसरी तरफ लोग उसे सच्चे हृदय से पुकार भी रहे हैं। गीता में भी भगवान ने कहा है कि हे अर्जुन! जब मैं इस सृष्टि पर अवतरित होता हूँ तो मुझे कोटों में कोई और कोई में भी कोई ही जान पाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में आज वही आत्मा-परमात्मा के मिलन का वही महाकुंभ और स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना का कार्य चल रहा है। परमात्म मिलन की शैली अपने आप में अलग और दिव्य है। कुछ व्यक्ति विशेष के परमात्म मिलन के अनुभव, उन्हीं के मुखार्विन्द से...

माउण्ट आबू में स्वर्ग सा अनुभव, साक्षात् भगवान से मिलन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में शान्ति व सद्भाव का संदेश दिया जाता है। माउण्ट आबू में आने पर मुझे स्वर्ग जैसा अनुभव हुआ। हम साक्षात भगवान से मिले, उन्होंने हमसे बात की। पैसों से मखमल के गद्दे तो खरीदे जा सकते हैं, बढ़िया बिस्तर भी लिए जा सकते हैं परन्तु गहरी नींद आध्यात्म से ही प्राप्त हो सकती है। यह संस्था सम्पूर्ण विश्व में स्थापित होने के कारण, आध्यात्मिकता चारों ओर फैल रही है जो कि समाज के लिए ऑक्सीज़न का काम कर रही है।

- महामण्डलेश्वर श्री जनारदन महाराज सतपंत, फैजपुर।

साकार बाबा से मिलने पर स्वयं भगवान से वार्तालाप की भासना

यह ब्रह्मा बाबा द्वारा अनुसंधान किया हुआ मानव कल्याण हेतु ज्ञान है - जिससे लोगों में अच्छे संस्कार ग्रहण करने की इच्छा पैदा होती है, जिससे वे सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित होते हैं। यह ज्ञान ईश्वरीय शिक्षा का है, अलौकिक व पारलौकिक शक्तियों का है।

यह ज्ञान ब्रह्मा बाबा की तपस्या के द्वारा जन-जन तक पहुँचा। साकार बाबा से मिलने पर मुझे स्वयं भगवान से वार्तालाप करने की भासना आई।

-करुणाकरण भंते, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बौद्ध गया महाबोधि विहार, ऑल इंडिया कमिटि

परमात्मा से मिलते ही मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

सभी को ईश्वरीय शिक्षाओं व शक्तियों से अवगत कराने का कार्य वर्षों से ये संस्था करती आ रही है इसलिए इसे ईश्वरीय विश्वविद्यालय कहा जाता है। मैं जब पहली बार परमात्मा से मिला तो मैं उन्हें देखकर बिल्कुल ही भाव-विभोर हो गया और मुझे ऐसा लगा कि मैं इस दुनिया में ही नहीं हूं, मैं किसी दूसरे लोक की सैर कर रहा हूं। कुछ समय के लिए मैं अपने गांव, मठ तथा सभी सांसारिक बातों को भूल गया था। मैं माउण्ट आबू बार-बार आना चाहता हूं। वहां का वातावरण बहुत अच्छा है और उनका अतिथियों के आदर-सत्कार करने का तरीका सभी को सीखने लायक है। **-सिद्धेश्वर स्वामी जी,** नागनूर बेलगाम।

परमपिता के ज्ञान से ही सुंदर भविष्य आएगा

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की पढ़ाई का पहला उद्देश्य है कि व्यक्ति पहले स्वयं को जाने कि मैं कौन हूं, मेरा कर्तव्य क्या है, मेरे माता-पिता कौन हैं, अपना असली देश क्या है, अपनी संस्कृति क्या है? मेरा मानना है कि आज जिस प्रकार शिक्षा पद्धति पश्चिमी होती जा रही है तो अगर उसको फिर अपनी संस्कृति की ओर लाना है तो इसके लिए ऐसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का होना आवश्यक है। आज समाज की सबसे बड़ी ज़रूरत शांति है जो कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही समाज को प्राप्त हो सकती है। उन्हीं के ज्ञान से सुंदर भविष्य आयेगा और समाज तथा राष्ट्र को उत्कृष्ट करेगा।

-शास्त्री कपिल जीवनदास, मैनेजिंग ट्रस्टी श्री स्वामी नारायण गुरुकुल।

"आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं, लेकिन खुदा के नूर से, आदम जुदा नहीं"

मैंने महसूस किया कि साकार ब्रह्मा के तन में ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमात्मा, आदम की आत्मा के साथ विराजमान थे। उस दिन से मैंने ईश्वरीय जीवन को दृढ़ता से अपनाया और यह निश्चय किया कि समस्त जीवन बापदादा की श्रीमत पर चलकर ईश्वरीय सेवा में लगाऊँगा। ऐसा अनुभव और संस्कारों में परिवर्तन करना किसी साधारण व्यक्ति का काम नहीं था। यह तो उसी साधारण मानवी तन में अवतरित परमपिता परमात्मा का ही कार्य था। मैं जब पिताश्री जी के सम्मुख जाता था, मुझे वही ज्योति उनके मस्तक पर नज़र आती थी और उनके नयन-मुलाकात करते ही अपरम-अपार अलौकिक आनंद का अनुभव होता था। इतना मीठा, इतना प्यारा था शिवबाबा।

-ब्र.कु.निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़

परमपिता परमात्मा शिव घोर कलियुगी रात्री के अंत में ब्रह्मा तन में अवतरित होते हैं, इसलिए उसे "जन्मदिन" न कहकर महाशिवरात्रि कहा जाता है। अभी वह समय चल रहा है और परमात्मा 5 विकारों - काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार - रूपी अंधियारे को भस्म कर नव सृष्टि रचने का कार्य कर रहे हैं।

साकार बाबा से प्रथम मिलन की अनुभूति

सन 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गई थी तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अंदर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे भाव-विभोर कर दिया। बाबा ने मेरे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्द ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है - ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की।

-ब्र.कु.राज, नेपाल

मैं बाबा के निमंत्रण पर ही मधुबन गई थी

जब मैं मुम्बई में ज्ञान में आई थी तो बाबा को पत्र लिखा था कि मैं आपसे मिलना चहती हूँ। बाबा ने तुरन्त मुझे पत्र लिखा कि बच्ची बाबा के पास बहुत संतोष हैं, बाबा भी देखना चाहता है कि यह कौनसी संतोष है। तुरन्त आ जाओ बाबा के पास। शुरू-शुरू में बाबा किसी बच्चे को जब पहली बार मिलते थे तब गोद लेते थे। जब मेरी बारी आई तो मैं खड़ी हो गई। बाबा मुझे कहने लगे कि जब बच्चे मुझसे मिलने आते हैं तो मैं भी परमधाम से इस तन में आता हूँ। ये बोल मुझको पक्के हो गए कि ब्रह्मा बाबा नहीं परन्तु स्वयं परमात्मा शिव बाबा बोल रहे हैं। मधुबन पहुँचने पर बाबा ने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं एक पल में सारी दुनिया भूल गई। **-ब्र.कु.संतोष,** महाराष्ट्र ज़ोनल इंचार्ज, ब्रह्माकुमारीज़

हर श्वांस में बाबा बसा है

परमात्मा ने हमारी पालना बिल्कुल माँ-बाप समान की है। बाबा हमेशा हम लोगों को ठाकुर कहकर पुकारते थे। हमें यह लगता ही नहीं कि हम परमात्मा के साथ रह रहे हैं, क्योंकि परमात्मा ने बिल्कुल माँ-बाप जैसी पालना की। मैं बाबा के संग और बाबा मेरे संग हमेशा रहता है। हमारे हर श्वांस में बाबा बसा है। शिव बाबा ने हमें अपना बना लिया और आज अपने सेवा का महान कार्य करा रहा है। परमात्मा के साथ हमारा पूरा जीवन सफल हो गया। मनुष्य आत्माएं सभी परमात्मा के बच्चे हैं और सभी को आकर अपना वर्सा लेना चाहिए। समय बहुत तेज़ी से बीत रहा है। समय निकल जाने के बाद तो कुछ नहीं बचेगा।

-राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

बाबा की पालना का रिटर्न देने का समय

पहली बार जैसे ही पिताश्री का दर्शन हुआ तो मुझ आत्मा में एक विशेष अलौकिक आनंद और आत्म-तृप्ति का भाव भर गया। मैंने बाबा को मन ही मन अपना आदर्श और गुरु मान लिया। हमारा पहला-पहला पाठ है कि हम शरीर नहीं आत्मा हैं परन्तु साथ-साथ परमात्मा निराकार होते हुए भी साकार में आकर हम बच्चों को पालना दे रहे हैं केवल इसी बात के लिए कि बच्चे किसी भी तरह निराकार से जुड़े रहें और भगवान को अपना साथी बनाएं। बाबा अभी हम बच्चों को पक्का करा रहे हैं कि बच्चे, आने वाले समय में आपको स्वयं परमपिता परमात्मा का साथी बनकर उनको प्रत्यक्ष करना है और वो दिन दूर नहीं जब हमें स्वयं परमात्मा का माध्यम बनकर सभी को उसकी अनुभूति करानी होगी। बाबा ने जो हम बच्चों को इतनी पालना दी है उसका रिटर्न देने का समय आ गया है।

-ब्र.कु.करुणा, ब्रह्माकुमारीज़ मल्टी मीडिया के अध्यक्ष, मा.आबू

सदा कम्बाइन्ड स्वरूप ही सामने रहता था

साकार बाबा के दिनों में मुझे तो सदा स्मृति में यही रहता था कि साकार बाबा के तन का आधार लेकर निराकार शिव परमात्मा सतयुगी दुनिया का पुनर्निर्माण कर रहे हैं। सदा कम्बाइण्ड स्वरूप ही सामने रहता था। फिर भी प्रात: मुरली के समय जब बाबा सभी को दृष्टि देते थे तो उस समय बहुत ही शक्तिशाली अनुभव होता था। मुरली के बीच-बीच में कई बार ऐसा लगता था कि स्वयं निराकार सर्वशक्तिवान, पतित-पावन अपनी वाणी के माध्यम से हम बच्चों में शक्ति भर रहे हैं। बाबा बहुत ही दृढ़ एवं निर्भय थे। स्वभाव मधुर एवं सरल था, ऊँची हस्ती परन्तु असीम निर्मानता, अद्भुत परख शक्ति एवं निर्णय शक्ति। स्पष्ट परन्तु सरल, सदा निमित्त भाव बाबा में देखा। करावनहार शिव बाबा ही है, अत: ब्रह्मा बाबा सदा स्वयं को निमित्त करनहार ही समझते थे। उनके संग से उनके कुछेक गुण स्वत: ही स्वयं में भी अनुभव होने लगते थे। **-ब्र.कु.अमीरचंद,** क्षेत्रीय निदेशक पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, ब्रह्माकुमारीज़

देह का भान भूल आंतरिक खुशी से हुआ भरपूर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में दिया जाने वाला आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्यों का दिव्यीकरण करता है तथा आत्मा की शक्तियों का विकास करता है। जब मैं पहली बार अपने परमपिता परमात्मा से मिला तो मुझे अपने देह का भान नहीं रहा। मुझे ऐसी कशिश हुई कि परमात्मा से पवित्रता की लाईट निकल रही है और मुझे भी उस लाईट के द्वारा पवित्रता का अनुभव हो रहा है। मैं अपने-आपको बहुत हल्का महसूस कर रहा था। और मेरा मन बस शांति, प्रेम और खुशी से भर गया। परमात्मा जब आता है तो हमें अपनी आत्मिक शक्तियों का भान हो जाता है। उनके सानिध्य में आकर मैं वास्तविकता से रूबरू हुआ कि परमात्मा मेरा पिता है, मैं उनका बच्चा हूं। मन ही मन एक विचार स्फुरित हुआ, जैसे कि बस अब उनके प्यार में ही जीवन बिताना है। जबकि परमात्मा से मिलन दुनिया के लिए एक कल्पना है लेकिन मेरे लिए तो साक्षात परमात्मा के साथ का अनुभव बना रहता है।

-ब्र.कु.ओम प्रकाश, क्षेत्रीय निदेशक इंदौर, ब्रह्माकुमारीज़

कराया दिव्य साक्षात्कार कहा आओ बनायें नई दुनिया

दादा लेखराज को हुआ था नई दुनिया की स्थापना एवं कलियुग के विनाश का साक्षात्कार

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने परिचय दिया कि:-

निजानन्द् स्वरूपम् शिवोहम्,
शिवोहम्
आनन्द स्वरूपम् शिवोहम्,
शिवोहम्
प्रकाश स्वरूपम् शिवोहम्
शिवोहम्

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के सृष्टि परिवर्तन का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

यहाँ आकर मेरा प्यार भगवान से और बढ़ गया

आध्यात्मिक ज्ञान में ही आत्मा का अध्ययन समाया हुआ है। आत्मा से सम्बन्धित कोई भी बात आध्यात्मिकता में आती है। जैसे आत्मा क्या है, कहां से आती है, क्यों है ये संसार में, आत्मा का महत्व क्या है, आत्मा का पिता कौन है? मुझे परमात्मा से प्यार हमेशा से ही था, लेकिन जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे लगा कि यही मेरे सच्चे पिता हैं और उनके द्वारा जब परमपिता शिव परमात्मा का ज्ञान मिला तो मुझे पता चला कि मेरा सच्चा पिता तो वो है। तब से मेरा प्यार परमात्मा के लिए और भी बढ़ गया। मनुष्य तो समझते हैं परमात्मा तो सजा देता है, भगवान से डरना चाहिए लेकिन अब हमें ये अनुभव हुआ कि भगवान से डरना नहीं बल्कि भगवान से प्यार करना चाहिए। जब मैंने पहली बार अव्यक्त बापदादा को देखा तो मुझे बाबा से शक्ति का अनुभव हुआ और महसूसता हुई कि ये परमात्मा ही बोल रहे हैं कोई मनुष्य आत्मा नहीं बोल रही है।

-ब्र.कु.शीलू, वरिष्ठ राजयोगा शिक्षिका, माउण्ट आबू

बाबा में भगवान की ही एक्टीविटी देखती थी

ब्रह्मा बाबा की चलन से हमें भगवान के चरित्र का अनुभव होता था। हर समय हमारा ध्यान बाबा के चेहरे पर, बाबा की दृष्टि पर और बाबा के बोल पर ही होता था कि भगवान क्या करते हैं और कैसे करते हैं। साकार बाबा को देखने का हमारा उद्देश्य यही होता था कि भगवान उस रथ द्वारा कैसे देखते हैं, कैसे बोलते हैं और कैसे बच्चों के साथ खेलपाल करते हैं। ब्रह्मा बाबा में शिव बाबा है, यह निश्चय करने के लिए हमें मेहनत नहीं करनी पड़ी। जैसे आज लोग पूछते हैं कि ब्रह्मा बाबा में ही परमात्मा आता है, कैसे विश्वास करें? लेकिन कभी भी ऐसा प्रश्न हमें आया ही नहीं। हमें तो हर पल यही अनुभव होता था कि हम भगवान के साथ हैं और वह अपना कार्य कर रहा है और हमें भी वैसा ही करना है। बाबा की दृष्टि इतनी मीठी और प्यारी होती थी कि हमें साकार रूप में भी दिखाई पड़ती थी और महसूस भी होती थी। ज्ञान एक होते हुए भी बाबा हर आत्मा की योग्यता अनुसार ही धारणा बताते थे।

-दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं निराकार परमात्मा से मिल चुका हूँ

यह एक ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ जाति, धर्म, देश का कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ ही वह शिक्षा मिलती है जिससे हम स्वयं को और परमात्मा पिता को पहचान सकते हैं। यह और संस्थाओं से भिन्न है क्योंकि यहाँ सभी को उच्च संस्कार जागृत करने की शिक्षा मिलती है। मैं इस संस्था में आकर स्वयं निराकार परमात्मा से मिला, बात की। उस अनुभव को बयान करना भी मुश्किल है। किसी भी धर्मपिता, महान नेता ने विश्व की इतनी सेवा नहीं की है जितनी परमात्मा शिव के प्रवेश के पश्चात् ब्रह्मा बाबा ने की। **-वी.ईश्वरैया, पूर्व एक्टिंग चीफ जस्टिस,** आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय

मधुबन का वातावरण एक "सुपरपावर" के कंट्रोल में

स्वयं परमात्मा का ज्ञान यहाँ से प्राप्त हो रहा है। यह शिक्षा सभी मज़हबों के लिए है। वाणी में मधुरता, कर्मों में पवित्रता लाने की यहाँ से शिक्षा मिलती है। शान्तिवन में आते ही सहज योग लग जाता है, कोई व्यर्थ विचार नहीं आते। मधुबन में जो कुछ हो रहा है वह साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं है। यहाँ के वातावरण को एक सुपरपावर कंट्रोल करती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान की तो स्कूली बच्चों को भी सुविधा मिलनी चाहिए ताकि वे कुरीतियों से पहले ही बच जाएं। **-पूर्व जस्टिस एल.सी.भादू,** बिलासपुर हाई कोर्ट

परमात्मा शिव इस संस्था द्वारा बना रहे मनुष्य को देवता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, और विद्यालयों व संस्थाओं से अलग इसलिए है क्योंकि इसकी स्थापना स्वयं परमात्मा शिव ने की है। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य है मनुष्य को देवता बनाना। हमारे शास्त्रों, पुराणों में भी लिखा हुआ है कि भगवान एक साधारण तन में अवतरित होते हैं लेकिन जो सात्विक बुद्धि वाले लोग होते हैं वे उसको पहचान लेते हैं। परमात्मा से मिलने के बाद हमारा जीवन दिव्यता से भर जाता है, हमारे जीवन में आध्यात्मिक उन्नति आने लगती है और वो दिव्य शक्तियां प्राप्त होती हैं जिनका हम हर परिस्थितियों में उपयोग कर सफलता को प्राप्त कर सकते हैं। **-धरमेश,** सिटिंग जज, राजकोट।

परमात्म मिलन पर व्यर्थ से मिला छुटकारा

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़ीटिव संकल्पों की रचना होने लगी, मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती है। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है।

-वी.डी. राठी, हाई कोर्ट जज, ग्वालियर

आत्मा-परमात्मा का महा मिलन मेला

माउण्ट आबू में समूचे विश्व में महिलाओं का सबसे बड़ा संगठन प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विधालय ही एक ऐसी जगह है जहां आत्मा परमात्मा के मिलन का साक्षात महाकुंभ होता है। बात सुनने में भले ही अविश्वसनीय प्रतीत हो किंतु यह सत्य है और यह मिलन महफिल पिछले 78 वर्षों से निरंतर जारी है। ज्ञान गंगा में स्नान कर आत्माएं पावन बनकर नारी से श्रीलक्ष्मी और नर से नारायण बनने की नाव में सवार हो गये हैं। नाव का खिवैया आप सभी महान आत्माओं का पुनः आह्वान कर रहा है इस नाव में सवार होने के लिए। दुनिया के किसी भी कोने में आप जाइए वहां ये चैतन्य ज्ञान गंगाएं पतितों को पावन बनाने के कार्य में पुरुषार्थ कर रही हैं। इस संस्था की बागडोर माताओं-बहनों के हाथ में है। इतना ही नहीं, बल्कि दुनिया भर में तेजी से बढ़ रहे अन्याय, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, अश्लीलता, सम्बन्धों में हो रही गिरावट को रोकने और एक बेहतर, स्वर्णिम सृष्टि का सृजन करने में अपनी महती भूमिका निभा रही है। ये श्वेत वस्त्रधारिणी, राजयोगिनी, बाल ब्रह्मचारिणी, ब्रह्माकुमारियां सभी मनुष्य आत्माओं को सहज राजयोग और ईश्वरीय ज्ञान देकर स्वयं तथा परमात्मा के परिचय के साथ ईश्वरीय मिलन का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं।

परमात्मा ने ब्रह्मा को बनाया माध्यम

चूंकि परमात्मा का अपना शरीर नहीं होता है। कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ, केहि विधि नाना। सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिन्ध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का बिल्कुल एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की ज़रूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उस दौरान चूंकि परमात्मा को भारत और वन्दे मातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

कठिन तपस्या से विश्व-परिवर्तन की रखी नींव

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने भविष्य की स्थिति को और शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारम्भ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं और बहनें तथा कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप और त्याग की शक्ति दूसरों को भी आध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

1950 में माउण्ट आबू में हुआ स्थानान्तरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू आई। माउण्ट आबू में से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में आध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ।

संस्था का फैलाव आज विश्व भर में

78 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुई यह संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। ब्रह्माकुमारीज़ के पूरे विश्व के 137 देशों में नौ हजार से भी ज्यादा सेवा केन्द्रों के माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना तथा उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा जारी है। आज दुनिया भर से लोग परमात्मा के अवतरण में उनसे मिलन मनाने के लिए आते हैं।

परमात्मा शिव को मिलने यहाँ हज़ारों की संख्या में लोग आते हैं। वे आज भी दादी हृदयमोहिनी के माध्यम से लोगों को मिलते हैं। यहाँ सब वर्ग-समुदायों के लोग परमात्मा से मिलन मनाकर पवित्रता की उच्चतम स्थिति को प्राप्त करते हैं। स्वयं-भू आज माता-पिता के रूप में गुणों व शिक्षाओं से श्रृंगारित करते हैं। जिन्हें लोग ढूंढ़ रहे थे, आज वे उन आत्माओं की प्यास बुझा रहे हैं।

अमृतवेले बाबा सुनाता है मुरली

मेरे जीवन में इस ज्ञान से बहुत बदलाव आया है। पहले मैं अपसैट हो जाती थी परन्तु अब कैसी भी परिस्थिति हो मैं शान्ति महसूस करती हूँ। क्रोध पर मैंने 90 प्रतिशत काबू पा लिया है। जब मैं योग में बैठती हूँ तो मुझे बहुत अच्छे अनुभव होते हैं। कभी-कभी तो अमृतवेले मुझे मानो बाबा उसी दिन की मुरली सुना देता है। बाबा से पहली बार मिलने पर मैंने जब उनकी आंखें देखीं तो मुझे ऐसा लगा जैसे कि मैं उन्हें जन्म-जन्मांतर से देखती ही आ रही हूँ। मैं अब भगवान की बच्ची बन गई हूँ। मुझे लगता है मानो वो पल-पल साथ ही है।

-तेजश्री परवाल, ज्वेलर्स, जयपुर

परमात्म मिलन से रोम-रोम हुआ पुलकित

जब मेरा संस्था से परिचय हुआ तो मुझे बहुत उत्सुकता हुई कि परमात्मा का मनुष्य आत्माओं से मिलन, उनकी रूहानी दृष्टि, व मधुर बोल कैसे होंगे? मेरे जीवन का वह सुनहरा पल आया जब मैं नवम्बर 2010 आबू में अपने परमपिता परमात्मा शिव जो सर्व आत्माओं के पिता हैं, जिन्हें हम प्यार से शिव बाबा कहते हैं। उनके मिलन से, उनकी दृष्टि से रोम-रोम पुलकित हो गया। अन्दर से निश्चय हो गया कि जीवन को सही दिशा मिल गई। ऐसे परमात्म मिलन का सुख प्राप्त करने हेतु मैं हर वर्ष एक बार आबू अवश्य जाती हूँ। अपने को सौभाग्यशाली समझती हूँ।

-डॉ.सविता आनन्द, आई.एफ.एस, जयपुर (राज.)

यहाँ ईश्वर के पास बैठे होने की होती है अनुभूति

इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा समग्र ज्ञान का प्रकाश जो सम्पूर्ण सृष्टि में विस्तारित होता है इससे सहज रूप से ये प्रतीत होता है कि वाकई ये संस्था ज्ञान का एक उत्कृष्ट केन्द्र है और स्वाभाविक रूप से इसे ईश्वरीय विश्व विद्यालय कहा जाना उचित है। यह आध्यात्मिक ज्ञान सम्पूर्ण मानव समाज के लिए एक ऐसा पाथेय है जिससे मनुष्य का नैतिक जीवन तो सुधरता ही है और साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी निर्मल होता जाता है। इस संस्था में कदम रखने मात्र से ही मनुष्य के जीवन में कई सारे श्रेष्ठ बदलाव आ जाते हैं। इस संस्था में आकर परमात्म शक्ति का जिस तरह से अन्तर्बोध होता है तो यह अनुभव होता है कि यह ईश्वर की प्रत्यक्षता का ही प्रमाण है। जब भी मैं इसके सत्संग में बैठता हूं तो मुझे स्वतः अनुभूति होती है कि मैं ईश्वर के पास बैठा हूं और उनसे शक्तियां मिल रही हैं। **-मधुकर द्विवेदी,** वरिष्ठ पत्रकार, रायपुर

इस संस्था को चला रही अव्यक्त सत्ता परमात्मा शिव ही हैं

मैं 1974 में पत्रकारों और साहित्कारों की वर्कशॉप के अन्तर्गत इस संस्था के संपर्क में आया जहां हमारा राजयोग शिविर भी कराया गया। हमें जो ज्ञान दिया गया उस ज्ञान में मुझे बहुत तार्किकता और वैज्ञानिकता लगी। इसमें कोई भेदभाव, दिखावा, आडंबर जैसा कुछ भी नहीं था। और मुझे अनुभव हो रहा था कि ऐसा ज्ञान कोई सामान्य व्यक्ति नहीं दे सकता। जब मैं बाबा से मिला तो मुझे लगा कि कोई अव्यक्त सत्ता ज़रूर है जो इस माध्यम का उपयोग करके हमको ज्ञान दे रही है और वो सत्ता लोक-कल्याण और व्यक्ति कल्याण का ध्येय लेकर बात करती है तथा वो सत्ता हमारे पिता परमात्मा शिव ही हैं यह भी मुझे निश्चय हो गया। इस संस्था द्वारा दिया जाने वाला ज्ञान इस रावण राज्य रूपी दुनिया को रामराज्य अर्थात् सतयुग, स्वर्ग में परिवर्तित करने के लिए है।

-प्रो. कमल दीक्षित, संपादक, राजी-खुशी पत्रिका, इंदौर।

मधुबन में बाबा मिलन पर मैं दूसरी दुनिया में पहुँच गया

यहाँ स्वयं परमात्मा शिव बाबा से योग लगाना शसिखाया जाता है जिससे मनुष्य का चारित्रिक विकास होता है। इस विश्वविद्यालय में परमात्मा खुद पढ़ाते हैं ब्रह्मा के तन का प्रयोग करके। एक से अधिक बार मैं खुद परमात्मा के रूबरू हुआ हूँ और अत्यंत शान्ति का अनुभव किया है। मन में कोई विकार न आए उसकी प्रेरणा मिलती रही। जब बाबा से मैं मधुबन में मिला तो मानो एकदम ही खो गया, जैसे किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया हूँ। फिर जब मुरली खत्म हो गई तो मेरी युगल ने मुझे झकझोरा तब कहीं होश आया। यहाँ आकर मैंने यह सीखा है कि किसी की भी कमी-कमज़ोरी को चित्त पर नहीं रखना है। इससे यह फायदा है कि हम स्वयं भी विकृतियों से दूर रहेंगे।

-गोविंद वोरा, संपादक, अमृत संदेश, रायपुर

ईश्वरीय सत्ता ही कर रही है यहाँ कार्य

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय एक अनोखा विश्वविद्यालय है जो अतुल्य है। मैं कई बार माउण्ट आबू गया हूँ परन्तु यहाँ के जो नियम हैं, ज्ञान है, योग की शिक्षा है, सहज धारणाएं हैं और सेवाभाव है, कहीं और नहीं देखा। छोटे से छोटे कार्यकर्ता से लेकर बड़ी दादियों तक को मैंने अपनी आंखों से देखा है पर ऐसा अनुशासन, स्वच्छता और सादगी कहीं नहीं है। इस विश्वविद्यालय को देखकर यह आभास होता है कि यह कार्य ईश्वरीय सत्ता के अलावा कोई नहीं कर सकता।

-श्री चंद्रशेखर स्वामी जी, हुक्केरी मठ - बेलगाम

बाबा मिलन पर हुआ दिव्य अनुभव

जीव ईश्वर से कैसे मिले इसका ज्ञान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ही दिया जाता है। यहाँ योग, ध्यान, साधना, उपासना तथा आराधना की जो शैली सिखाई जाती है, उसी से आत्मा एवं परमात्मा का मिलन संभव है। संसार परिवर्तन के लिए परमात्मा ने इस संस्था की स्थापना की है। डायमण्ड हॉल में बाबा मिलन पर मुझे दिव्य अनुभव हुआ और साक्षात् भगवान की अनुभूति हुई।

-रसिक पीठाधीश महंत जन्मजेयशरण, अध्यक्ष श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण न्यास, जानकी घाट, बड़ा स्थान, अयोध्या

बाबा से मुलाकात जीवन के सबसे सुखदाई पल

जो पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर शिव बाबा हैं उनसे ध्यान लगाकर, मार्गदर्शन लेने का जहाँ एकत्रिकरण हो, जहाँ सभी लोग एकसाथ बैठकर उनकी अनुभूति करें, वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। जो विद्या साक्षात् ईश्वर की प्राप्ति करा दे यह वही ज्ञान है। अगर विश्व में सुंदरतम से सुंदरतम कोई नगर है तो वह है माउण्ट आबू में स्थित ब्रह्माकुमारीज़ आश्रम। ईश्वर की प्राप्ति केवल यहीं हो सकती है। साकार बाबा से मेरी 3 मुलाकातें हुई और वे मेरे जीवन के सबसे सुखदाई पल थे।

-डॉ.स्वामी केशवानंद सरस्वती, काशी

बाबा के सानिध्य में छोटे बच्चे जैसा अनुभव हुआ

समस्त विश्व में ऐसी व्यवस्था नहीं है जैसी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में है। यह अनुभव करने की बात है, बयान करने की बात नहीं है। मैं जब माउण्ट आबू में परमात्म मिलन के अवसर पर पहुँचा तो मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे एक छोटे बच्चे को अपने घर में माँ-बाप की गोद में होता है। ऐसा लगा मानो वो मुझे सहला रहे हैं। यहाँ के पवित्र वातावरण और व्यवस्था जैसी पारदर्शिता संसार में और कहीं नहीं।

- महामण्डलेश्वर दर्शन सिंह त्यागमूर्ति, अध्यक्ष षड़दर्शन साधु समाज एवं धर्म स्थान सुरक्षा ट्रस्ट, हरिद्वार

माउण्ट आबू ही परमात्म मिलन की पवित्र भूमि

यहाँ आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है और देही-अभिमानी बनने का ज्ञान प्राप्त होता है। मैंने यह सीखा कि हम खुद को ही बदल सकते हैं, औरों को नहीं। पहले निश्चय नहीं था परन्तु जब मधुबन होकर आई तो धीरे-धीरे परिवर्तन आने लगा और यह पूर्णतः विश्वास हो गया कि हम आत्माएं हैं और सबका अपना-अपना पार्ट है। माउण्ट आबू आकर सच में ऐसा एहसास होता है कि हम स्वयं परमात्मा से मिल रहे हैं। मैंने दुनिया की तड़क-भड़क बहुत देखी है पर जो शान्ति बाबा के यहाँ आके मिली वो कहीं भी नहीं है। परमात्मा का ज्ञान मेरे लिए सुकून बनके आया और अब तो लगता है कि यही जीवन की प्राथमिकता है।

-दिव्या गोयल, जयपुर, गार्मेंट एक्स्पोर्टर एवं अंतर्राष्ट्रीय फैशन डिज़ाइनर

परमात्मा मिलने के बाद नज़रिये में आया बदलाव

इस ईश्वरीय ज्ञान से हमारे लाइफ के प्रति जो सोचने का नज़रिया होता है वो बिल्कुल ही बदल जाता है। ये एक बिना दवाई के वण्डरफुल ट्रीटमेंट है। मन की ऐसी कई बीमारियां हैं जिनकी कोई दवाई नहीं की जा सकती, लेकिन यहां मेडिटेशन के प्रैक्टिस से तथा परमात्मा की याद से ये बीमारियां पूरी तरह ठीक हो जाती हैं। पहली बार जब मैं बाबा से मिला तो मेरे शरीर के सारे रोंगटे खड़े हो गए थे और आज भी मैं बाबा के उस मिलन को भूल नहीं पाता। **-डॉ.एस.पी.लोचड,** सीनियर साइन्टिस्ट, हेल्थ फिज़िक्स डिपार्टमेंट, न्यूक्लियर साइंस सेंटर, नई दिल्ली

अव्यक्त बाबा से मिलन एक अनोखा अनुभव

ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव इस विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है। चाहे वह मुरलियों के माध्यम से हो, चाहे दादियों-दीदियों के माध्यम से हो, यहाँ जो वाणियाँ सुनने को मिलती हैं वे साक्षात् ईश्वर की ही लगती हैं। जो जीने का ढंग इस संस्था में बताया जाता है वह सब सम्प्रदायों से उठकर है और समाज के उत्थान के लिए है। अव्यक्त बाबा से मिलने पर भी मेरा अनोखा अनुभव रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि दादी नहीं, वहाँ ब्रह्मा बाबा ही बैठे हैं।

-जसवीर सिंह, राजस्थान अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष।

बाबा मुझे हर कदम पर गाइड करते हैं

परमात्मा हमारा पिता है, शिक्षक है, सद्गुरु है और खुदा दोस्त है, मुझे इन सभी रिश्तों का गहन अनुभव होता है। साकार में भी मैंने बाबा को देखा और अभी अव्यक्त में भी देख रहे हैं। हमें हर कदम पर गाइड करते हैं, संभालते हैं जैसे माँ-बाप संभालते हैं बच्चे को गिर जाने पर, ठीक वैसे ही। अगर कभी भी भटक जाएं तो उससे हमें टचिंग होती है कि बच्चे यह ठीक नहीं है। बाबा शिक्षक बनके हमें ज्ञान की पराकाष्ठा कराता है।

-ब्र.कु.सुषमा, क्षेत्रीय संचालिका जयपुर

परमात्म मिलन पर एक शक्ति मुझमें प्रवेश हुई

शास्त्र तो किसी व्यक्ति विशेष ने लिखे हैं। यहाँ भगवान खुद पढ़ाता है, नई-नई शिक्षाएं देता है। अगर समाज इस ज्ञान को पूरा उठा ले तो सुधार निश्चित है। पहली बार परमात्मा से मिलने पर लगा कि एक शक्ति मुझमें प्रवेश हो रही है। मैंने खुद को यज्ञ के प्रति समर्पित भी कर दिया है। ब्रह्माकुमारीज़ में जो ज्ञान दिया जा रहा है वो सर्वोत्तम है और इससे ही दुनिया में बदलाव आएगा। **-डॉ.गुप्ता,** जयपुर

बाबा की स्मृति रहती है सदा मेरे मन में

मैं 22 वर्षों से ज्ञान में हूं। यहाँ पर पवित्रता की शिक्षा दी जाती है। मेरे लिए यह सबसे महत्वपूर्ण विषय है जो और किसी भी विश्व विद्यालय या अन्य किसी भी संस्था में नहीं बताया जाता। यहाँ योग के द्वारा दिव्य दृष्टि दी जाती है जिसके द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कराया जाता है, यह दिव्य दर्शन है। नर से नारायण बनने की कला यहाँ ही सिखाई जाती है। बाबा की स्मृति मेरे मन के तार को हमेशा झंकृत करती रहती है। **-डॉ.अजय जैन,** फिज़ीशियन, ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसिस, नई दिल्ली

पीस ऑफ माइंड चैनल - ईश्वरीय उपहार

आज के इस आधुनिक युग में परमात्म अवतरण व उनके द्वारा हो रहे विश्व परिवर्तन की जानकारी सभी को प्रदान करने में विज्ञान की अहम भूमिका के अन्तर्गत एक ऐसा चैनल जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित व प्रसारित होता हो। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा संचालित पीस ऑफ माइंड चैनल एक अमूल्य ईश्वरीय उपहार है। इसे केबल टी.वी., रिलायंस तथा वीडियोकॉन d2h पर देखा जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 9414153999, 83020222022, email - karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

इस वर्ष हम निराकार परमपिता परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण की 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयंति मना रहे हैं। जहाँ एक ओर शिव परमात्मा अनेक आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करके दैवी-स्वराज्य की स्थापना का दिव्य कर्म कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इस पुरानी पतित सृष्टि के विनाश के लिए आणविक अस्त्रों का जखीरा भी तैयार हो चुका है। साथ-साथ में प्राकृतिक आपदाएं भी उग्र रूप धारण कर रही हैं। तापमान में वृद्धि, भूकंप, मौसम में बदलाव इत्यादि प्राकृतिक असंतुलन भी ज़ोर पकड़ रहे हैं। यह पुरानी दुनिया के अंत का स्पष्ट संकेत है। अतः सर्व मनुष्यात्माओं को हार्दिक ईश्वरीय निमंत्रण है कि वर्तमान संगमयुग में निराकार परमात्मा शिव व स्वयं को यथार्थ रीति से पहचानकर निकट भविष्य में आनेवाली नई दैवी-संस्कृति, सतोप्रधान दुनिया के अपने जन्मसिद्ध ईश्वरीय वर्से को प्राप्त करें। परमात्म ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने तमोगुणी संस्कारों का विनाश करें और दिव्य गुणों को धारण करें। इसकी अधिक जानकारी के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के नज़दीकी सेवाकेन्द्र पर सम्पर्क करें।

स्थानीय सेवाकेन्द्र का पताः

ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन, जानकारी के लिए सम्पर्क करें: मो. 9414154344, 9414006096, 9414182088
email- mediabkm@gmail.com, bkdillip@gmail.com

तासगांव। 1 दिसम्बर 2013 के एड्स जनजागृति दिवस पर ब्र.कु. डॉ. वैशाली को सम्मानित करते हुए डॉ. पी.बी. बुराडे,सिविल सर्जन,सांगली। साथ हैं डॉ. राम हंकारे,जिला आरोग्य अधिकारी, सांगली तथा अन्य।

हाथरस। ज्ञान चर्चा के पश्चात् समूह चित्र में जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार, ब्र.कु. भावना, ब्र.कु. सीमा तथा अन्य।

कुचामन सिटी। योग गुरु बाबा रामदेव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रचना।

दिल्ली-जैतपुर। 'ग्रामीण महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम के दौरान युवा कांग्रेस कमिटी के नेता राजू नागर एवं ओम एनक्लेव के प्रधान मनोज पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उषा।

छतारी- गीता जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित समाजसेवी डॉ.भोला सिंह सूर्यवंशी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.कमलेश। साथ हैं मीना बहन, भाई सत्यप्रकाश तथा अन्य।

अहमदनगर-महा.। जनलोकपाल बिल के संसद में पास होने पर समाजसेवी अन्ना हज़ारे को सम्मानित करते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी। साथ हैं ब्र.कु. दीपक।

सोनपेठ-महा.। स्वामी तत्वानंद भारती को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मीरा तथा सोने के व्यापारी प्रमोद गावर्सकर।

वैंगलुरू। क्रिसमस प्रोग्राम के अन्तर्गत दीप प्रज्वलित करते हुए प्रीस्ट एन्थोनी प्रसाद, किंग जॉर्ज, नारायण स्वामी, एम.फिलीप, ब्र.कु. लक्ष्मी तथा ब्र.कु. नागराज।

कथा सरिता

आख़िरी उपदेश

गुरुकुल के शिष्य अत्यंत उत्साहित थे। उनकी बारह वर्षों की शिक्षा आज पूर्ण हो रही थी और अब वे अपने घर लौट सकते थे। गुरु भी शिष्यों की शिक्षा-दीक्षा से प्रसन्न थे और गुरुकुल की परम्परा के अनुसार शिष्यों को आख़िरी उपदेश देने की तैयारी कर रहे थे।

सभी शिष्य एक जगह एकत्रित हो गए। गुरु के हाथ में लकड़ी के खिलौने थे। उन्होंने शिष्यों से कहा, 'आपको इन तीनों खिलौनों में अंतर ढूंढ़ने हैं।' सभी शिष्य ध्यानपूर्वक खिलौनों को देखने लगे। तीनों बिल्कुल एक समान दिखने वाले गुड्डे थे। सभी चकित थे कि भला इसमें क्या अंतर हो सकता है। तभी किसी ने कहा, 'अरे, यह देखो, इस गुड्डे के कान में एक छेद है।' यह संकेत काफी था, जल्द ही शिष्यों ने पता लगा लिया और गुरु से बोले, 'इन गुड्डों में बस इतना ही अंतर है कि एक के दोनों कानों में छेद है। दूसरे के एक कान और एक मुंह में छेद है और तीसरे के सिर्फ एक कान में छेद है।'

गुरु बोले, 'बिल्कुल सही!' और उन्होंने धातु का एक पतला तार देते हुए उसे कान के छेद में डालने के लिए कहा। शिष्यों ने वैसा ही किया। तार पहले गुड्डे के एक कान से होता हुआ दूसरे कान से निकल गया। दूसरे गुड्डे के कान से होते हुए मुंह से निकल गया और तीसरे के कान में घुसा पर कहीं से निकल नहीं पाया।

तब गुरु ने कहा, 'प्रिय शिष्यों, इन गुड्डों की तरह ही आपके जीवन में तीन तरह के व्यक्ति आयेंगे। पहला गुड्डा ऐसे व्यक्तियों को दर्शाता है, जो आपकी बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देंगे। ऐसे लोगों से कभी अपनी समस्या सांझा न करें। दूसरा गुड्डा ऐसे लोगों को दर्शाता है, जो आपकी बात सुनते हैं और उसे दूसरों के सामने उगल देते हैं। इनसे बचें और कभी महत्वपूर्ण बातें इन्हें न बताएं। तीसरा गुड्डा ऐसे लोगों का प्रतीक है, जो आपकी बात सुनकर पचा जाते हैं। इन पर आप भरोसा कर सकते हैं। उनसे किसी भी तरह का विचार-विमर्श कर सकते हैं। सलाह ले सकते हैं। इन्हें आपको कभी नहीं खोना चाहिए।

पवित्रता

संत कबीर प्रतिदिन स्नान करने के लिए गंगा तट पर जाया करते थे। एक दिन उन्होंने देखा कि पानी काफी गहरा होने के कारण कुछ ब्राह्मणों को जल में घुसकर स्नान करने का साहस नहीं हो पा रहा है। उन्होंने अपना लोटा मांज-धोकर एक व्यक्ति को दिया और कहा कि जाओ ब्राह्मणों को दे आओ ताकि वे भी सुविधा से गंगा स्नान कर लें।

कबीर का लोटा देखकर ब्राह्मण चिल्ला उठे–'अरे! जुलाहे के लोटे को दूर रखो। इससे गंगा स्नान करके तो हम अपवित्र हो जाएंगे।' कबीर आश्चर्यचकित होकर बोले–'इस लोटे को कई बार मिट्टी से मांजा और गंगा जल से धोया, फिर भी साफ न हुआ तो दुर्भावनाओं से भरा यह मानव शरीर गंगा में स्नान करने से कैसे पवित्र होगा?

निर्विकार भाव में निहित है शान्ति

इटली में एक पादरी थे। वे अत्यंत शांत स्वभाव के थे। उन्हें कभी किसी बात पर क्रोध नहीं आता था। यदि कोई व्यक्ति उन्हें कटु वचन कह दे या अप्रिय आचरण करे तो भी उनके चेहरे पर शिकन तक नहीं आती थी। वे सदा मुस्कुराते रहते। जिन लोगों को उनका सदा आनंदित रहना पसंद नहीं था, वे तो उन्हें परेशान करने में ही लगे रहते, किंतु पादरी के मुख से कभी विरोध के दो शब्द भी नहीं निकलते। बार बार प्रयास करने के बाद भी कभी कोई पादरी को गुस्सा नहीं दिला पाया। उनकी इस असीम सहनशीलता को देखकर एक दिन लोगों के एक समूह ने उनसे पूछा, 'आप किसी भी बात से प्रभावित नहीं होते, गुस्सा आपको तनिक भी नहीं आता। सहन करने की इतनी शक्ति आपको कहां से मिली?' पादरी ने जवाब दिया, 'जिसका लक्ष्य ऊँचाई पर जाना होता है, वह ऐसे ओछेपन में स्वयं को नहीं डालता। मैं सदैव ऊपर की ओर देखता हूँ और मुझे लगता है कि कहने वाले कुछ भी कहें, किंतु मुझे अपना मन विरोधी विचारों से खराब नहीं करना चाहिए। मैं नीचे देखता हूँ, तो मुझे लगता है कि आखिर उठने-बैठने और सोने के लिए व्यक्ति को कितनी ज़मीन चाहिए? फिर मेरी दृष्टि घोर कष्ट का जीवन बिता रहे लोगों पर जाती है तो मेरे मन में उनके प्रति करुणा पैदा होती है। याद रखिए कि जिसके मन में करुणा और समभाव होता है, वह कभी क्रोध नहीं कर सकता। मेरी शांति का यही रहस्य है। जो हर स्थिति में निर्विकार भाव से रहना सीख लेता है, वह स्थायी रूप से शांति को उपलब्ध हो जाता है, क्योंकि तब उसे न खुशी भासती है और न दु:ख कष्ट देता है। वह सदैव आनंद भाव में ही रहता है।'

रानी के भक्ति भाव ने शेर को जीता

उत्तर भारत में आंबेरगढ़ के राजा थे माधवसिंह। उनकी पत्नी रत्नावली भले स्वभाव की थी। एक दिन उसने अपनी प्रिय दासी को रोते हुए देखा। कारण पूछने पर बोली, 'ये तो भगवान की भक्ति से मिले अपार सुख के कारण उपजे प्रेमाश्रु हैं।' दासी की बातों ने रानी में भक्ति-भाव जागृत कर दिया। वह सादे-वस्त्र पहनकर भगवान श्रीकृष्ण की उपासना में लीन रहने लगी। राजा माधवसिंह उस समय उज्जैन गए हुए थे। इस बीच, आंबेरगढ़ में कुछ संत-महात्माओं का आगमन हुआ। रत्नावली ने उनके साथ सत्संग किया और लंबी आध्यात्मिक चर्चा भी की। यह जनचर्चा का विषय बन गया। माधवसिंह को वजीर ने पत्र लिखा कि रानी महल छोड़कर साधु-संतों के साथ घंटों तक बैठी रहती हैं। यह पत्र पढ़कर माधवसिंह क्रोधित हुआ। जब वह आंबेरगढ़ लौटा तो पहले रानी को मृत्युदंड देना चाहा, किंतु उसके मंत्रियों ने राज्य में आक्रोश फैलने की आशंका जताई। फिर तय हुआ कि भूखे शेर को रानी के महल के द्वार पर छोड़ देंगे। भूखा शेर रानी का शिकार कर लेगा और हम इसे दुर्घटना बता देंगे। जब शेर भावमग्न रानी की ओर दौड़ा तो दासी 'शेर-शेर' कहकर चिल्लाई पर रत्नावली उसे देखकर बोली, 'नहीं, ये तो नृसिंह भगवान हैं। मेरे गिरधर आज यह वेश लेकर आए हैं।' रानी ने सिंह की आरती उतारी। शेर चुपचाप खड़ा रहा और फिर पलटकर चला गया। राजा अटारी से देख रहा था। माधवसिंह ने हाथ जोड़कर क्षमा मांगी। तब रानी बोली- 'क्षमा मैं नहीं, मेरे गिरधर गोपाल ही कर सकते हैं। मैं आपके लिए उनसे प्रार्थना करूंगी।' माधवसिंह ने रानी के भक्ति भाव के मुताबिक महल की सारी व्यवस्थाएं बदल दीं। सच्चा भक्त निडर और पवित्र हृदय वाला होता है। ऐसे ही लोग ईश्वरीय साक्षात्कार को उपलब्ध होते हैं।

महा शिवरात्रि - ब्र.कु.सूर्य

परमपिता का इस धरा पर अवतरण... और वह भी काली रात में... परन्तु इस प्रतिदिन वाली रात में नहीं, बल्कि कलियुग के घोर अंधकार में। जब मनुष्य आत्माएँ सबकुछ भूलकर अज्ञान तिमिर में भटकती हुई, माया के पाँच भूतों के अधीन होकर पाप कर्म में प्रवृत्त हो गईं। पाप के कारण जब चहुँ ओर दु:ख अशान्ति व त्राहि-त्राहि हो गई, जब मानव में देवत्व तो छोड़ो मानवता भी नष्ट हो गई। वही समय पुन: धरा पर उपस्थित हुआ है जब कि भक्ति में भी शक्ति नहीं रही और वह स्वार्थ से भरपूर होकर, प्रेमहीन व दिखावा मात्र रह गई है। जब मंदिर धन बनाने का साधन रह गए और धार्मिक ग्रंथ जीवन से बहुत दूर चले गए। जब काम-वासना ने अपना जाल चारों ओर फैला दिया और जब इन मनोविकारों की अग्नि में मानव सभ्यता जलकर नष्ट होने को है। ऐसे दु:ख, अशान्ति व रोग-शोक के काल में अनेक लोग भगवान को पुकार रहे हैं कि - हे मुक्ति दाता, उद्धारक, हे सुख दाता, दु:ख हर्ता आओ और हमें मुक्त करो।

क्या प्रभु पधारेंगे?

भगवान के दिव्य अवतरण की बात भारत में बहुचर्चित है। श्रीमद्भगवद्गीता में तो भगवान ने गारंटी दी है कि मैं धर्म-ग्लानी के समय धर्म की पुन:स्थापना के लिए आता हूँ और पुन: आऊँगा। क्या अब धर्म-ग्लानी का समय नहीं है? क्या मनुष्य ने अपनी पवित्रता नहीं खोई है? क्या कलियुग के अंत के सभी लक्षण प्रकट नहीं हो रहे हैं? क्या कन्याएं अपने मुख से वर नहीं माँग रही हैं? क्या कन्याओं ने अपनी पवित्रता नष्ट नहीं कर दी है? क्या अन्न पुड़ियों में नहीं बिक रहा है? क्या गाय विष्टा नहीं खा रही है? क्या मनुष्य ने सभी मर्यादाएं नहीं तोड़ दी हैं? क्या कलियुग के विनाश के लिए एटम बम नहीं बन गए हैं? सभी भगवान को पुकार रहे हैं तो उन्हें अवश्य आना चाहिए। क्या प्यार के सागर परमपिता अपने वत्सों का दु:ख हरने नहीं आएंगे? उन्हें अवश्य आना चाहिए। क्या गीता के भगवान अपना वायदा नहीं निभाएंगे? अवश्य निभाएंगे।

शिव अजन्मा हैं, परन्तु अवतार लेते हैं

कुछ लोग शिव नाम सुनकर महादेव की ओर देखते हैं और सोचते हैं कि महादेव को तो देह है फिर वे अजन्मा कैसे हुए? उनका बाल रूप भी दिखाते हैं, परन्तु उनके माता-पिता की कहीं चर्चा नहीं हुई। हम जिन शिव की चर्चा कर रहे हैं वे महादेव से भिन्न निराकार परमात्मा हैं जो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता हैं। जो देह रहित, अजन्मा, मुक्ति-जीवनमुक्ति के दाता, सर्व के परमपिता हैं। वे ही धर्म-ग्लानी के समय आते हैं। वे ही ज्ञान के सागर भी हैं इसलिए सत्य ज्ञान देकर व राजयोग की शिक्षा सिखाकर पुन: धर्म की स्थापना करते हैं तथा मनुष्य को देवता बनाते हैं। वे परकाया प्रवेश करते हैं, जन्म नहीं लेते। वे देह के बंधन से मुक्त रहते हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा के मानव तन में आते हैं, इसे ही अवतार कहते हैं।

वे आ चुके हैं

वर्तमान समय परमात्मा के अवतरण का समय है। कलियुग अपनी चरम सीमा पर है। सृष्टि चक्र के अनुसार कलियुग के बाद पुन: सतयुग आना है। युग परिवर्तन का दिव्य कार्य वे स्वयं कर रहे हैं। परन्तु इसके लिए वे मनुष्य आत्माओं को सत्य ज्ञान देते हैं और सम्पूर्ण पावन बनाकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। उन्हें माया जीत बनाते हैं, स्मृतियाँ दिलाते हैं और शक्ति देकर शिव-शक्तियाँ बनाते हैं। यह कार्य वे पिछले 78 वर्ष से कर रहे हैं, बल्कि अब तो स्थापना का उनका यह कार्य पूर्ण होने को आया है। कुछ ही समय में कलियुगी विश्व समाप्त हो जाएगा और धरा पर देव-युग का आगमन हो जाएगा।

भक्तों का आह्वान

शिव रात्री के दिन मंदिरों में बहुत रौनक होगी। चारों ओर भक्तगण शिवालयों की ओर जाते नज़र आएंगे। शिव के व्रत रखेंगे। रात्री जागरण करेंगे - इस कामना से कि शिव दर्शन देने आएंगे। शिव भक्ति का फल देने को आ चुके हैं। वे उन सभी भक्तों का आह्वान कर रहे हैं जिन्होंने द्वापर युग से उनकी भक्ति की है। वे उन्हें भक्ति का फल देने पुन: अवतरित हुए हैं। वे आह्वान कर रहे हैं कि हे मेरे भक्तों, हे मेरे वत्सों, आओ ... मैं तुम्हारे पास आ गया हूँ। आओ मुझसे सत्य ज्ञान लेकर मुक्ति और जीवनमुक्ति का अधिकार पा लो। तुम अज्ञान की गहरी नींद में सो गए हो। अब जागो। एक रात जगने से क्या होगा, अब सदा के लिए जाग जाओ। स्वयं को पहचानो और मुझ सर्वशक्तिवान से योग लगाओ तो तुम मेरे धाम में आ जाओगे। तुम्हारे सभी विकर्म नष्ट हो जाएंगे और तुम अनन्त सुखों को प्राप्त करोगे।

अब सदा का व्रत रखो

भक्त गण इस दिन व्रत रखते हैं, इसे भोले का व्रत भी कहते हैं और सोचते हैं कि भोलेनाथ तो सहज ही प्रसन्न होते हैं, वे तो खाली झोली भर वरदान देते हैं। यह यत्य है कि बिगड़ी को बनाने वाला शिव आकर सबकी बिगड़ी को बना रहे हैं। वे सर्व खज़ानों से हमारी झोली भर रहे हैं। वे ज्ञान रत्नों से सभी पार्वतियों का श्रृंगार कर रहे हैं। वे प्रसन्न हुए हैं और प्रसन्न होकर सभी को वरदान दे रहे हैं।

उनकी आज्ञा है कि अब पवित्रता का व्रत धारण करो। एक दिन के लिए नहीं बल्कि सदा के लिए क्योंकि तुम आत्माएं पवित्र थीं और अब विकारों की दलदल में फँस चुकी हो। मैं तुम्हें पावन बनाकर मुक्तिधाम वापस ले जाऊँगा। अनेक मनुष्यात्माओं ने पवित्रता का व्रत धारण कर लिया है। इस व्रत को धारण करने से धरा स्वर्ग बनेगी और हम शिव के मिलन का परमानन्द प्राप्त कर सकेंगे। आप भी शिव की संतान हो, केवल भक्त नहीं हो। हे शिव भक्तों, भाँग पीने से शिव प्रसन्न नहीं होंगे। वे प्रसन्न होंगे आज्ञाकारी बनने से। तो आओ, शिव से मिलन मनाओ। अपने मनोविकारों को उन पर बलि चढ़ा दो। स्मृति स्वरूप होकर आओ और उनसे अमृत पान करके अमृत्व को प्राप्त करो।

बोंगईगांव-असम। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ए.सरण, एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लि., ब्र.कु. लोनी तथा अन्य भाई बहनें।

दिल्ली-महरौली। ब्रह्म सिंह तंवर को छत्तरपुर क्षेत्र का विधायक बनने पर ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनीता।

शाहपुर-उ.प्र.। समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव कुंवर प्रताप सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. पारुल।

इन्दौर। अभय प्रशाल में आयोजित सांस्कृतिक संध्या 'आनंद सरगम' में कार्यक्रम के दौरान नृत्य प्रस्तुत करते हुए शक्ति निकेतन छात्रावास की छात्राएं।

उदयपुर। 'लिकिंग हार्ट्स टूरिज़म कैम्पेन' कार्यक्रम में होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष सुभाष सिंह राणावत, होटल एसोसिएशन के सेक्रेट्री के.पी.अग्रवाल, तालदार ट्रैवल्स के मालिक दीपक तालदार, आर्चीज़ ग्रुप और सैफ्रोन होटल के मालिक रिशभ भनावत तथा ब्र.कु. गीता।

जबलपुर। दैनिक समाचार पत्र "पत्रिका" के जबलपुर संस्करण की चौथी वर्षगांठ पर आयोजित "सर्व धर्म सम्मेलन" में अपने विचार व्यक्त करते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद जी। मंचासीन हैं सुरेश कुमार, हाजी लाल क़ादरी एवं ब्र.कु.विमला।

नरसिंहपुर। "विशाल आध्यात्मिक सम्मेलन" का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता, एम.एल.ए. जलम सिंह पटेल, कृषि उपज मंडी प्रेसीडेंट रविन्द्र पटेल, बी.एल.ए पावर प्लांट डायरेक्टर एस.आर.मिश्रा, के.एन.गर्ग एवं ब्र.कु.कुसुम।

बड़ौदा-जी.आई.डी.सी। गुजरात की सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री फरीदा मीर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.धीरज। साथ हैं ब्र.कु.रीटा।

आध्यात्मिकता से हार्ड पावर बदलेगी सॉफ्ट पावर में - बनेगा भारत फिर से विश्व शक्ति

पटना। विश्व शक्ति का केन्द्र एक बार फिर भारत की ओर मोड़ ले रहा है। अग्रदूत के रूप में भारत इस शक्ति का किस प्रकार उपयोग करेगा - वर्तमान समय यू.एस.ए. में प्रयोग किए जा रहे हार्ड पावर के रूप में या भारत में 2500 वर्षों से चले आ रहे सॉफ्ट पावर के रूप में, ये चिन्तन का विषय है।

उक्त उद्गार केन्या निवासी प्रसिद्ध उद्योगपति निज़ार जुमा ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर से श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित 'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि, जो विश्व शक्ति सॉफ्ट से आज हार्ड हो चुकी है, उसका स्थानांतरण 2500 वर्ष पूर्व भारत से हुआ और वह मिस्र, चीन, रोम, ग्रीस, यू.के. होते हुए अब अंतत: अमेरिका पहुंची है। आज वह सॉफ्ट पावर बंदूकों, मूसलों एवं पैसों पर अति निर्भर है। परन्तु 2007 की आर्थिक मंदी के पश्चात् अब वह पावर फिर पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रही है।

जुमा ने कहा, "महत्वपूर्ण यह नहीं है कि हम इस शक्ति का प्रयोग कब करेंगे, परन्तु यह है कि कैसे करेंगे। हमें इस हार्ड पावर का परिवर्तन कर अब सॉफ्ट पावर वापिस लानी है। यह समस्त मनुष्य जाति के कल्याण हेतु हमें ही करना होगा। यह तभी संभव है जब हम आध्यात्मिकता को अपने जीवन में लाएंगे। एक बार हम आध्यात्मिकता को अपने दैनिक जीवन में अपनाकर ही यह जान सकते हैं कि उससे क्या परिवर्तन संभव है। आज भारत के पास ही वह आध्यात्मिक शक्ति है जो हार्ड पावर को सॉफ्ट पावर में बदल सकती है। आज मानव का जीवन कठिनाइयों से भर चुका है। सवाल फिर यही उठता है: हम खुद को आंतरिक रूप से शक्तिशाली कैसे बना सकते हैं? पावर तो सभी को पसंद है, पर आत्मिक बल ही सब समस्याओं का समाधान है, मैंने ये ब्रह्माकुमारीज़ में आकर सीखा है। अब वही ज्ञान मैं विश्व शांति के लिए जगह-जगह फैलाने का प्रयत्न कर रहा हूं।"

पटना। 'द फ्यूचर ऑफ पावर' कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग के पश्चात उद्योगपति निज़ार जुमा, ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.मौरीन तथा अन्य। पटना निवासी कार्यक्रम का लाभ उठाते हुए।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित योजना एवं विकास विभाग के प्रधान सचिव विजय प्रकाश ने कहा, "भारत के पास न आर्थिक शक्ति है और न ही क्रूरता है, जिससे कि वह विश्व शक्ति कहला सके। इस कलियुग में भी भारत को रचनात्मक एवं नई सोच को ही बढ़ावा देना होगा। हमें प्रकृति के साथ समन्वय में जीने की कला सीखनी होगी। इसमें आध्यात्मिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

उन्होंने कहा कि, शक्ति का असली मतलब है कि कोई व्यक्ति कितनी ज़िंदगियों को प्रेरित कर सकता है। मधुबनी पेंटिंग बिहार की सांस्कृतिक विरासत में से एक है और वह नॉन वायलेंट है। हमारी यह संस्कृति, सॉफ्ट पावर को दर्शाती है।

डेनमार्क के सामाजिक कार्यकर्ता क्रिस्टोफर लैन्ज ने कहा कि यूरोप, जहां का मैं निवासी हूं, वहां स्पीरिचुअलिटी और रिलीजन को अपने कर्म क्षेत्र से अलग रखा जाता है लेकिन भारत में अपना कार्य आध्यात्मिक आधार पर करने में कोई संकोच नहीं करता, यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु.रानी, निदेशिका ब्रह्माकुमारीज़, उत्तर बिहार ने कहा कि, भविष्य में जिन शक्तियों द्वारा यह संसार चलने वाला है, वर्तमान समय में हमें उन शक्तियों को अपने हृदय में धारण कर लेना है। यही शक्तियां हमें भविष्य में काम देंगी।

इस मौके पर फिलिप्स कंपनी के रणनीति सलाहकार एन्थनी एवं राजयोगिनी ब्र.कु.संगीता ने टॉक शो का संचालन किया और अतिथियों को अपने-अपने अनुभवों से अवगत कराया। टॉक शो में ए.एच.एम.दान्याल फाउण्डर सेंटर ऑफ पीस के संस्थापक, अध्यक्ष क्रिस्टोफर बैकमेन, क्रिस्टोफर लैन्ज तथा समाजसेविका वैष्णवी ने भाग लिया। इस टॉक शो का केंद्र बिन्दु था – मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और क्या करना है जिससे विश्व में शांति स्थापित हो।

ब्र.कु.मौरीन, एन्न ऑफ्बो तथा स्टीएना ने भी अपने विचार व्यक्त किए। ब्र.कु.संगीता ने सभी को कार्यक्रम के पश्चात् शुभकामनाएं दी।

आत्म-समृति के साथ जीवन जीने से परमात्म प्यार के पात्र बनेंगे

भगवान कहते हैं कि मेरा चिंतन करने से, मेरा अनन्य भक्त बनने से तुम निश्चित रूप से मेरे पास आ जाओगे, ये मेरा वचन है। भगवान भी वचनबद्ध हो जाता है। कितना सुंदर ये एक आश्वासन मिलता है कि अगर हम ईश्वर का चिंतन करेंगे, उसके अनन्य भक्त बन जायेंगे, तो निश्चित ही ईश्वर के पास चले जायेंगे। ये भगवान का वचन है, हमारे लिए। इसलिए हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग अर्थात् जो अनेक हद के धर्म में आ गये हैं कि ये मेरा धर्म है, ये तेरा धर्म है, या इस प्रकार की भावनाओं में हम जो आ गये हैं, तो सर्व धर्म का परित्याग करके, तुम मेरी शरण में आ जाओ। इससे श्रेष्ठ धर्म और कोई नहीं है।

धर्म माना जो हमें श्रेष्ठ आचरण करना सिखाए, धर्म माना जो जीवन में श्रेष्ठ धारणा करना सिखाए, ये है सच्चा धर्म। बाकी धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़े को बढ़ावा देना, ये कोई धर्म नहीं है। इसलिए भगवान कहते हैं, तुम सर्व धर्म का परित्याग करके मेरी शरण में आ जाओ, तो मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। ये भी भगवान का वचन हम आत्माओं के प्रति है। सब दैहिक धर्मों को छोड़कर एक ही धर्म हमारा है कि मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और परमात्मा की संतान होने के नाते मेरे कर्म कैसे होने चाहिए, मेरी विचार धारा कैसी होनी चाहिए? मेरी जीवन की धारणायें कैसी होनी चाहिए? सब स्पष्ट हो जाती हैं।

जिस प्रकार आज एक राजा का बेटा राजकुमार है। उस राजकुमार को सिखाना नहीं पड़ता है कि तू राजा का बेटा है इसलिए तुम्हें कैसे चलना चाहिए? कैसे बोलना चाहिए? कैसे खाना चाहिए? कैसे व्यवहार करना चाहिए? सिखाया नहीं जाता है और यह सिखाने वाली बात नहीं है। लेकिन जैसे ही यह स्मृति अंदर में रहती है कि मैं राजा का बेटा राजकुमार हूँ, तो अपने आप वो संस्कार राजसी होने लगते हैं। अपने आप उसके हर बोल-चाल, व्यवहार, कर्म में वो राजसी भाव झलकने लगता है। ठीक इसी प्रकार अगर हम भी ये स्मृति में रखें कि मैं परमात्मा की संतान हूँ, इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है। मैं आत्मा परमात्मा की संतान हूँ और इस स्मृति को जागृत रखें तो हमारा हर बोल-चाल, व्यवहार, कर्म कैसा होगा? क्या परमात्मा का बच्चा कहलाने जैसा मैं हूँ? स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि इससे बड़ा आईना और कोई नहीं है कि मैं परमात्मा की संतान हूं तो मेरी विचारधारा कैसी होनी चाहिए। मेरे विचारों में किसी के प्रति द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। अगर हम भगवान के बच्चे, दुनिया की सुप्रीम ऑथोरिटी, ब्रह्माण्ड के, तीनों लोकों के जो मालिक हैं, उसके हम बच्चे हैं तो हमारा उठना, बैठना, चलना, फिरना, बोलना, व्यवहार करना सब कैसा होना चाहिए? इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है। इसलिए भगवान ने कितने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हे अर्जुन, सर्व धर्मों का परित्याग करके तुम मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सर्व पापों से मुक्त कर दूंगा। उसके लिए सहज भाव यही है कि उस स्मृति को हम जागृत करें।

भगवान ने कहा, यह गुह्य गोपनीय ज्ञान ऐसे पुरूष को कभी नहीं कहना जो आत्म-संयमी न हो, जो एकनिष्ठ न हो, जो भक्त न हो, और जो भगवान से द्वेष करता हो। उनके लिए यह गुह्य गोपनीय ज्ञान समझ में आने वाला भी नहीं है। परंतु जो पुरूष मुझसे प्रेम करके इस गुह्य ज्ञान का उपदेश मेरे भक्तों को बताता है। वह शुद्ध स्थिति को प्राप्त कर मेरे पास आएगा। इस संसार में उससे बढ़कर कोई अन्य सेवक न तो मुझे अधिक प्रिय है और न कभी होगा।

जो इस पवित्र ज्ञान का अध्ययन करता है और श्रद्धा से सुनता और सुनाता है, वह सारे पापों से मुक्त हो जाता है। वह शुभ लोकों को प्राप्त करता है जहाँ पुण्य आत्मायें निवास करती हैं। कितनी श्रेष्ठ गति को प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन उसके लिए जैसे भगवान ने कहा कि प्रतिदिन अध्ययन करने की आवश्यकता है। जब अध्ययन करने की बात आती है, तो लोग क्या कहते हैं, बहन जी चाहते तो हैं लेकिन टाइम नहीं मिलता है। टाइम का बड़ा प्रॉब्लम हो जाता है आज के युग में लोग सोचते हैं कि इतनी फास्ट हम जीवन जीते हैं। इस फास्ट लाइफ के अंदर टाइम निकालना ज्ञान सुनने के लिए प्रतिदिन, वो भी अध्ययन करने के लिए टाइम निकालना, ये तो बड़ा कठिन लगता है। मुझे एक बहुत सुंदर उदाहरण याद आता है।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

एक बार एक प्रोफेसर अपने बच्चों को कुछ सिखाना चाहते थे। तो बड़ा कांच का जार लेकर के आये और गोल्फ के बॉल लेकर आए। बच्चों को कहा ये बॉल है, जो जार में भर दो। सभी ने बॉल से भर दिया जार को, तो प्रोफेसर ने कहा कि अभी और जायेगा। तो कहा नहीं अभी भर गया। अभी और नहीं जायेगा। प्रोफेसर ने छोटे-छोटे पत्थर निकाले और कहा डालो उसके अंदर, जायेगा। जो गैप थी उससे सारे छोटे-छोटे पत्थर भीतर चले गए। तो पूछा कि और जायेगा, तो कहा कि अभी नहीं जायेगा ये तो फुल हो गया। प्रोफेसर ने बालू निकाली और कहा कि ये डालकर देखो कि ये जायेगा, वो भी चली गई। फिर पूछा अभी और कुछ जायेगा। तो कहा अब बिल्कुल कुछ नहीं जायेगा। प्रोफेसर पानी लेकर आये और कहा डालो, वो भी चला गया।

टोंक-राज.। शाश्वत यौगिक खेती प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि विधायक अजीत मेहता, परियोजना कृषि निदेशक राजेन्द्र कुमार खण्डेलवाल, ब्र.कु.राजु एवं ब्र.कु.सुष्मा।

सरहिन्द-पंजाब। चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए बैंक मैनेजर संजीव कुमार। साथ हैं बैंक मैनेजर गुरमीत सिंह तथा ब्र.कु.साक्षी।

रीवा-म.प्र.। कुठीला में सर जी.वी.एस स्कूल में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु.निर्मला। साथ हैं प्रसिद्ध विचारक पत्रकार मधुकर द्विवेदी तथा अन्य।

मंगरुलपीर-महा.। व्यसन मुक्ति अभियान का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए राज्यमंत्री सुभाष राव ठाकरे, डॉ.चंद्रकांत राठी, ग्रामीण अस्पताल के डॉ. बख्तावर, ब्र.कु.सचिन परव, ब्र.कु.रुक्मिनी एवं ब्र.कु.सारिका।

तेल्हारा-महा.। पूज्य श्री राजेशकृष्ण जी महाराज (श्रीधाम वृंदावन) को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रमिला।

चोपड़ा-महा.। 'एक शाम प्रभु के नाम' कार्यक्रम में कला एवं संस्कृति प्रभाग की ओर से सर्व को शुभकामना देते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं ब्र.कु. मिनाक्षी तथा ब्र.कु. दयाल।

बकतरा- माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुनीता।

करजण-गुज.। "समय की पुकार - परमात्म शक्ति द्वारा स्वर्णिम संसार" के उद्घाटन समारोह पर दीप प्रज्वलन करते हुए ईला बा, जिला कॉंग्रेस प्रमुख चन्द्रकान्त भाई पटेल, ब्र.कु.निरंजना, ब्र.कु.दीपिका और ब्र.कु.नरेन्द्र।

नवी मुंबई-वाशी। रोटरी क्लब ऑफ नवी मुंबई में प्रवचन के पश्चात् क्लब प्रसीडेंट अमर नायर मंगलम्, फाउण्डेशन ट्रस्टी नरेश गुप्ता, प्रेम कुमार, ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.प्रीति तथा अन्य।

पुणे-खड़की। सी.एफ.वी.डी के फैमिली वेल्फेयर कार्यक्रम में महिलाओं को मेडिटेशन क्लास व स्ट्रेस फ्री लिविंग का कोर्स कराते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी। पहली पंक्ति में ब्रीगेडियर की युगल श्रीमति कुशवाहा तथा कर्नल त्यागी की युगल एवं अन्य।

भीलवाड़ा-राज.। 'आंतरिक शांति एवं सद्भावना' विषय पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उद्योगपति शांतिलाल पानगड़िया, ब्र.कु. इन्द्रा, ब्र.कु. तरुण, ब्र.कु. तारा तथा अन्य।

तालापारा-छ.ग.। पावर प्लांट में भ्रष्टाचार के ऊपर भाषण देने के पश्चात् जनरल मैनेजर आर.एस.गुप्ता तथा एम.सी.साइ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रमा।

माउण्ट आबू में दूरबीन चिकित्सा उपलब्ध

ग्लोबल हॉस्पिटल एन्ड रिसर्च सेंटर, माउण्ट आबू में सुविधाओं का विस्तार

दूरबीन शल्य चिकित्सा विशेषज्ञ सेवाएं प्रतिदिन उपलब्ध

1. दूरबीन द्वारा पित्ताशय की पथरी, विभिन्न प्रकार की हर्निया, अपेन्डिक्स, पेट की गांठ आदि के ऑपरेशन प्रतिदिन।
2. डे केयर सर्जरी की सुविधा - सुबह ऑपरेशन, शाम छुट्टी।
3. ऑन डिमांड कॉस्मैटिक सूचर (हल्के से हल्के निशान वाले टांके)।
4. अन्य सभी प्रकार की सर्जरी सुविधा प्रतिदिन।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - 09461307077

अलीबाग-महा.। साप्ताहिक 'रायगड का युवक' के वर्धापन दिवस पर ब्र.कु. भारती को उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार देते हुए जिला क्रीड़ा अधिकारी रिकामे बहन। साथ हैं सिडको के चेयरमेन प्रमोद हिंदुराव तथा संपादक जयपाल पाटिल और प्राध्यापक जवाहर मुथा।

राजकोट। जैन सोशल ग्रुप की ओर से आयोजित फन फेयर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी स्टॉल पर समझाने के पश्चात् ब्र.कु. भगवती तथा ब्र.कु. छत्रपाल।

तराना-म.प्र.। चैतन्य देवियों की झांकी के उद्घाटन के पश्चात् समूह चित्र में उद्योगपति बलराम जाजू, पुष्पा जाजू, बक्शी जी, ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.मीना, ब्र.कु.जगदीश तथा अन्य।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510

सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - **9414006096, 9414182088,** Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info, **सदस्यता शुल्क: भारत** - वार्षिक **170** रुपये, तीन वर्ष **510** रुपये, आजीवन **4000** रुपये । **विदेश - 2000** रुपये (वार्षिक), **कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।**

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/12-14, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road), Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2013-14, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH every month

संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।